Digitized by eGangotri

Kayaklp yoag.

कायाकल्प-योग

तस्मादायुः प्रकर्षार्थं प्राणकामैः सुखार्थिभिः ।
रसायन विधिः सेव्यो यथावत् सुसमाहितैः ॥
(कायाकल्प विधिः) चरक—

Nirander nath-Shastri

लेखक

कविराज पं० नरेन्द्रनाथ, शास्त्री,
काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य,
आयुर्वेद शिरोमणि, प्रतिष्ठित स्नातक.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

"इन्दु" स्मृति-माला का बारहवाँ पुष्प

कायाकल्प-योग

लेखक

कविराज पं० नरेन्द्रनाथ, शास्त्री,

काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य,

आयुर्वेद-शिरोमणि, प्रतिष्ठित स्नातक

SPS
610 N 63 K
15247

प्रकाशक

सरस्वती पुस्तक-भण्डार

आर्यनगर, लखनऊ.

Sirswati Pustak Bandar
Lucknow

प्रथमावृत्ति 2000 | मार्च सन् १९३८ ई० | मूल्य ॥=)

1937

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रकाशक
श्री रामविलास पाण्डेय
अध्यक्ष—सरस्वती पुस्तक-भंडार
आर्यनगर, लखनऊ.

acc: no: 15247
Rs 0-10-0
338

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
पं० मन्नालाल तिवारी
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, नज़ीराबाद,
लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दो शब्द

आयुर्वेद प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूर्वीय ऋषि मुनियों द्वारा प्रतिष्ठित कायाकल्प प्रयोगों का प्रयोग वर्तमान समय में विधिवत् प्रचलित होने लगा है। श्रीयुत् महामना पं० मदनमोहन मालवीयजी ने श्री तपसी बाबा के तत्वावधान में काया-कल्प विधि का अनुष्ठान कर आयुर्वेद के विलुप्त विज्ञान को पुनः जागृत और उन्नत किया है। यद्यपि अभी इस सम्बन्ध में अन्वेषणों और क्रियात्मक परीक्षणों की महती आवश्यकता है; परन्तु शनैः-शनैः इस दिशा में इसी प्रकार प्रयत्न करने से आशा है कि शीघ्र ही आयुर्वेद के सनातन और सर्वमान्य सिद्धान्तों का पुनः सम्पूर्ण विश्व में प्रचार हो जावेगा।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक आयुर्वेद के प्रसिद्ध विद्वान श्री पं० नरेन्द्रनाथजी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, साहित्याचार्य हैं। आपका इस ओर यह प्रयत्न सराहनीय और स्तुत्य है। जब आप गुरुकुल वृन्दाबन में अध्ययन करते थे, तभी आपसे आयुर्वेद जगत् को बहुत कुछ आशायें थीं। इस पुस्तक में प्रतिष्ठित लेखक ने काया-कल्प के सिद्धान्तों का विशद विवेचन करते हुए आयुर्वेद शास्त्रोक्त समस्त प्रयोगों का विशद वर्णन किया है—पुस्तक को पढ़कर प्रतीत होता है कि इस प्रकार की इस विषय की उच्चकोटि की और कोई पुस्तक नहीं लिखी जा सकती। हम लेखक को उनके इस प्रयास पर हार्दिक बधाई देते हैं।

आशा है कि प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमी सज्जन इस पुस्तक का अवलोकन कर लाभ उठायेंगे। पुस्तक सर्वसाधारण के लिये उपादेय है।

गुरुकुल-वृन्दाबन
१५ मार्च, १६३८

उमाशंकर द्विवेदी,
महोपाध्याय, आयुर्वेदाचार्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विषय-सूची

नं०	विषय			पृष्ठ-संख्या
१.	कायाकल्प का महत्त्व	...	...	५
२.	कायाकल्प की प्राचीनता	...	...	६
३.	कायाकल्प के सम्बन्ध में वैज्ञानिक युक्ति		...	७
४.	कायाकल्प का समय	...	...	८
५.	कायाकल्प में पञ्च कर्मों की विशेषता		...	९
६.	कायाकल्प का उपयोग	...	...	११
७.	कायाकल्प के दो भेद	...	...	१२
८.	कायाकल्प के लिये उपयुक्त स्थान		...	१३
९.	कायाकल्प का समय	...	...	१४
१०.	कायाकल्प की उपयोगिता	...	...	१५
११.	प्रथम (पहला) प्रयोग	...	...	१७
१२.	द्वितीय (दूसरा) प्रयोग	...	...	२१
१३.	तृतीय (तीसरा) प्रयोग	...	...	२३
१४.	चतुर्थ (चौथा) प्रयोग	...	...	२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१५. पञ्चम (पाँचवाँ) प्रयोग २८
१६. षष्ठ (छठवाँ) प्रयोग २६
१७. सप्तम (सातवाँ) प्रयोग ३०
१८. अष्टम (आठवाँ) प्रयोग ३१
१९. नवम (नवाँ) प्रयोग ३२
२०. दशम (दसवाँ) प्रयोग ३३
२१. एकादश (ग्यारहवाँ) प्रयोग ३४
२२. द्वादश (बारहवाँ) प्रयोग ३५
२३. त्रयोदश (तेरहवाँ) प्रयोग ३६
२४. चतुर्दश (चौदहवाँ) प्रयोग ३७
२५. पञ्चदश (पन्द्रहवाँ) प्रयोग ३८
२६. षष्ठदश (सोलहवाँ) प्रयोग ३९
२७. सप्तदश (सत्रहवाँ) प्रयोग ३९
२८. अष्टादश (अठारहवाँ) प्रयोग ... ४१
२९. एकोनविंशतिः (उन्नीसवाँ) प्रयोग ... ४२
३०. विंशतिः (बीसवाँ) प्रयोग ४४
३१. एकविंशतिः (इक्कीसवाँ) प्रयोग ... ४६
३२. द्वाविंशतिः (बाइसवाँ) प्रयोग ... ४६
३३. त्रयोविंशतिः (तेईसवाँ) प्रयोग ... ४७
३४. चतुर्विंशतिः (चौबीसवाँ) प्रयोग ... ४८
३५. पंचविंशतिः (पच्चीसवाँ) प्रयोग ... ४९
३६. सप्तविंशतिः (सत्ताइसवाँ) प्रयोग ... ४९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३७. अष्टाविंशतिः (अट्ठाइसवाँ) प्रयोग ... ५०
३८. एकोनविंशतिः (उन्तीसवाँ) प्रयोग ... ५०
३९. त्रिशंत् (तीसवाँ) प्रयोग ... ५१
४०. एकत्रिशंत् (इकतीसवाँ) प्रयोग ... ५२
४१. द्वात्रिशंत् (बत्तीसवाँ) प्रयोग ... ५४
४२. त्रयस्त्रिशंत् (तैंतीसवाँ) प्रयोग ... ५७
४३. चतुस्त्रिशंत् (चौंतीसवाँ) प्रयोग ... ५८
४४. पञ्चत्रिशंत् (पैंतीसवाँ) प्रयोग ... ६०
४५. षट्त्रिशंत् (छत्तीसवाँ) प्रयोग ... ६१
४६. सप्तत्रिशंत् (सैंतीसवाँ) प्रयोग ... ६२
४७. अष्टात्रिशंत् (अड़तीसवाँ) प्रयोग ... ६३
४८. एकोनचत्वारिशंत् (उन्तालीसवाँ) प्रयोग ... ६५
४९. चत्वारिशंत् (चालीसवाँ) प्रयोग ... ६६
५०. एकचत्वारिशंत् (इकतालीसवाँ) प्रयोग ... ६७
५१. द्विचत्वारिशंत् (बयालीसवाँ) प्रयोग ... ६८
५२. त्रिचत्वारिशंत् (तैंतालीसवाँ) प्रयोग ... ६९
५३. चतुश्चत्वारिशंत् (चवालीसवाँ) प्रयोग ... ७०
५४. पंचचत्वारिशंत् (पैंतालीसवाँ) प्रयोग ... ७१
५५. अन्तिम शब्द ७८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कायाकल्प-योग

प्राक्कथन

प्राचीन काल में भारतीय ऋषि तथा मुनि गण आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार स्वस्थ-वृत्त का पालन करते हुए सैकड़ों तथा हज़ारों वर्षों तक जीवित रहते थे। जिन नियमों तथा प्रयोगों का अनुष्ठान कर पूर्व महर्षियों ने अमित आयु को प्राप्त किया था, उनका विधान आयुर्वेद-ग्रन्थों में भली प्रकार उपलब्ध होता है। उपनिषदादि ग्रन्थों में भी इन्द्र, भरद्वाज आदि ऋषियों की आयु का प्रमाण तीन सौ वर्ष प्रतिपादन किया गया है। तीन-तीन सौ वर्ष ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए वे लोग वेदादिक ग्रन्थों के अध्ययन में तत्पर रहते थे। इसका एक मात्र कारण यह था कि वे समय-समय पर कायाकल्प रसायनों का विधिवत् सेवन किया करते थे। चरक संहिता के अन्दर इन कायाकल्प रसायनों के लाभ के विषय में इस प्रकार वर्णन है:—

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः।
प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम्।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विषय-सूची

नं०	विषय	पृष्ठ-संख्या
१.	कायाकल्प का महत्त्व	५
२.	कायाकल्प की प्राचीनता	६
३.	कायाकल्प के सम्बन्ध में वैज्ञानिक युक्ति ...	७
४.	कायाकल्प का समय	८
५.	कायाकल्प में पञ्च कर्मों की विशेषता ...	९
६.	कायाकल्प का उपयोग	११
७.	कायाकल्प के दो भेद	१२
८.	कायाकल्प के लिये उपयुक्त स्थान ...	१३
९.	कायाकल्प का समय	१४
१०.	कायाकल्प की उपयोगिता	१५
११.	प्रथम (पहला) प्रयोग	१७
१२.	द्वितीय (दूसरा) प्रयोग	२१
१३.	तृतीय (तीसरा) प्रयोग	२३
१४.	चतुर्थ (चौथा) प्रयोग	२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

१५. पञ्चम (पाँचवाँ) प्रयोग २८
१६. षष्ठ (छठवाँ) प्रयोग २९
१७. सप्तम (सातवाँ) प्रयोग ३०
१८. अष्टम (आठवाँ) प्रयोग ३१
१९. नवम (नवाँ) प्रयोग ३२
२०. दशम (दसवाँ) प्रयोग ३३
२१. एकादश (ग्यारहवाँ) प्रयोग ३४
२२. द्वादश (बारहवाँ) प्रयोग ३५
२३. त्रयोदश (तेरहवाँ) प्रयोग ३६
२४. चतुर्दश (चौदहवाँ) प्रयोग ३७
२५. पञ्चदश (पन्द्रहवाँ) प्रयोग ३८
२६. षष्ठदश (सोलहवाँ) प्रयोग ३९
२७. सप्तदश (सत्रहवाँ) प्रयोग ३९
२८. अष्टादश (अठाहरवाँ) प्रयोग ... ४१
२९. एकोनविंशतिः (उन्नीसवाँ) प्रयोग ... ४२
३०. विंशतिः (बीसवाँ) प्रयोग ४४
३१. एकविंशतिः (इक्कीसवाँ) प्रयोग ... ४६
३२. द्वाविंशतिः (बाइसवाँ) प्रयोग ... ४६
३३. त्रयोविंशतिः (तेईसवाँ) प्रयोग ... ४७
३४. चतुर्विंशतिः (चौबीसवाँ) प्रयोग ... ४८
३५. पंचविंशतिः (पच्चीसवाँ) प्रयोग ... ४९
३६. सप्तविंशतिः (सत्ताइसवाँ) प्रयोग ... ४९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

३७.	अष्टाविंशति: (अट्ठाइसवाँ) प्रयोग	...	५०
३८.	एकोनविंशति: (उन्तीसवाँ) प्रयोग	...	५०
३९.	त्रिशंत् (तीसवाँ) प्रयोग	...	५१
४०.	एकत्रिशंत् (इकतीसवाँ) प्रयोग	...	५२
४१.	द्वात्रिशंत् (बत्तीसवाँ) प्रयोग	...	५४
४२.	त्रयस्त्रिशंत् (तेंतीसवाँ) प्रयोग	...	५७
४३.	चतुस्त्रिशंत् (चौंतीसवाँ) प्रयोग	...	५८
४४.	पञ्चत्रिशंत् (पैंतीसवाँ) प्रयोग	...	६०
४५.	षट्त्रिशंत् (छत्तीसवाँ) प्रयोग	...	६१
४६.	सप्तत्रिशंत् (सैंतीसवाँ) प्रयोग	...	६२
४७.	अष्टात्रिशंत् (अड़तीसवाँ) प्रयोग	...	६३
४८.	एकोनचत्वारिशंत् (उन्तालीसवाँ) प्रयोग	...	६५
४९.	चत्वारिशंत् (चालीसवाँ) प्रयोग	...	६६
५०.	एकचत्वारिशंत् (इकतालीसवाँ) प्रयोग	...	६७
५१.	द्विचत्वारिशंत् (बयालीसवाँ) प्रयोग	...	६८
५२.	त्रिचत्वारिशंत् (तेंतालीसवाँ) प्रयोग	...	६९
५३.	चतुश्चत्वारिशंत् (चवालीसवाँ) प्रयोग	...	७०
५४.	पंचचत्वारिशंत् (पैंतालीसवाँ) प्रयोग	...	७१
५५.	अन्तिम शब्द ...	...	७८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कायाकल्प-योग

प्राक्कथन

प्राचीन काल में भारतीय ऋषि तथा मुनि गण आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार स्वस्थ-वृत्त का पालन करते हुए सैकड़ों तथा हज़ारों वर्षों तक जीवित रहते थे। जिन नियमों तथा प्रयोगों का अनुष्ठान कर पूर्व महर्षियों ने अमित आयु को प्राप्त किया था, उनका विधान आयुर्वेद-ग्रन्थों में भली प्रकार उपलब्ध होता है। उपनिषदादि ग्रन्थों में भी इन्द्र, भरद्वाज आदि ऋषियों की आयु का प्रमाण तीन सौ वर्ष प्रतिपादन किया गया है। तीन-तीन सौ वर्ष ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए वे लोग वेदादिक ग्रन्थों के अध्ययन में तत्पर रहते थे। इसका एक मात्र कारण यह था कि वे समय-समय पर कायाकल्प रसायनों का विधिवत् सेवन किया करते थे। चरक संहिता के अन्दर इन कायाकल्प रसायनों के लाभ के विषय में इस प्रकार वर्णन है:—

दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः।
प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम्।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वाक्सिद्धिं प्रणतिं कांतिं लभते ना रसायनात् ।
लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम् ॥

रसायन के सेवन से पुरुष दीर्घ आयु, स्मृति (पूर्व अनुभूत का स्मरण करने का सामर्थ्य), मेधा (धारणात्मक बुद्धि), आरोग्य, तरुण-वय (जवानी) प्रभा, वर्ण स्वर की उदारता (प्रशस्तता) उत्कृष्ट देह-बल, इन्द्रिय-बल, वाक्-सिद्धि (जो कहा जाय वह अवश्य होकर रहे), प्रणति (लोंकों की पूजनीयता) और कान्ति प्राप्त करता है। प्रशस्त (उत्तम) रस (आहार, वीर्य, विपाक) आदि के लाभ के उपाय ही रसायन हैं। (उत्तम रसों से धातु आदिकों में भी उत्तमता होती है)। इस प्रकार ऋषि मुनिगण सहस्र वर्षों तक निरामय रहकर योगाभ्यास आदि करने में समर्थ होते थे। वर्तमान समय में हम उनकी आयु के सम्बन्ध में सन्देह करते हैं कि मनुष्य की इतनी बड़ी आयु नहीं हो सकती और ऋषि-मुनियों की दीर्घायु की कथा केवल कपोलकल्पित है; परन्तु यदि हम निष्पक्षपात-दृष्टि से देखें तो इस समय भी कहीं-कहीं हमको ऐसे महात्माओं की कथा उपलब्ध होती है, जिनकी अवस्था १०० वर्ष से अधिक है। हम लोगों की अवस्था का औसत वर्तमान काल में इतना न्यून होगया है कि हमको जो पुरुष ८० या ८५ वर्ष की अवस्था का प्राप्त होता है, उसी को हम भाग्यवान या दीर्घायुवाला समझते हैं। दुर्भाग्य से हमारे भारतवर्ष में तो यह आयु का औसत अन्य देशों की अपेक्षा और भी न्यून है। एक समय वह भी था, जब कि भारतीयों की अवस्था का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

औसत सर्वोच्च था और आज हमीं लोगों की अवस्था न्यून से भी न्यून है। इसका एकमात्र कारण आयुर्वेद शास्त्रोक्त विधियों का सेवन न करना ही है। जो मनुष्य समय समय पर रसायनों का विधिवत् प्रयोग करता है, उसको रोग और वृद्धावस्था का आगमन नहीं होता। जो औषध स्वस्थ पुरुष के बल वीर्य को बढ़ाता है, प्रायः उसे ही रसायन शब्द से कहा जाता है। कायाकल्प रसायन का तात्पर्य भी यही है कि वह रसायन जो मनुष्य के शरीर को कल्प पर्यन्त स्वस्थ और सुदृढ़ रख सके। चक्रदत्त के अन्दर कहा भी है कि :—

यज्जरा व्याधि विध्वंसि भेषजं तद्रसायनम्।

अर्थात् जो औषध वृद्धावस्था तथा व्याधियों को नष्ट करनेवाली होती है, उसे रसायन कहते हैं। वृद्धावस्था का आगमन तभी होता है, जब कि शरीर में रस का अभाव हो जाता है, ये रासायनिक प्रयोग शरीर के अन्दर रस की स्थापना कर वृद्धावस्था को नहीं आने देते। अतः इनको रस का आयन (स्थान) कहते हैं।

आजकल कुछ ऐसी धारणा प्रचलित हो गई है कि वृद्धावस्था में रसायन विधि का प्रयोग करने से पुनः युवावस्था प्राप्त हो जाती है और इस सम्बन्ध में च्यवनप्राश रसायन का नाम बड़े चाव से लिया जाता है कि इसके प्रयोग से महर्षि च्यवन पुनः युवावस्था को प्राप्त हो गये थे; परन्तु आयुर्वेद का सिद्धान्त इससे कुछ भिन्न है। रसायन प्रयोग तो आगन्तुक व्याधि के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निवारक होते हैं, वृद्धावस्था के पूर्ण रूप से आ जाने पर, इन्द्रियों की शक्तियाँ क्षीण हो जाने पर रसायन का जो उचित प्रभाव होना चाहिए था, वह नहीं हो सकता। यद्यपि वृद्धावस्था में भी प्रयोग करने से लाभ तो अवश्य होता है और वयः स्थापन भी होता है; परन्तु कायाकल्प-रसायनों के प्रयोग का विधान जब तक वृद्धावस्था का आगमन न हो; तभी तक करना अधिक युक्त और शास्त्र-सम्मत है। महर्षि च्यवन को जो युवावस्था पुनः प्राप्त हुई थी, उसमें केवल च्यवनप्राश का ही कारण न था अपितु तपस्या का प्रभाव भी एक मुख्य कारण था, लेकिन सर्व-साधारण तो महर्षि नहीं हो सकते, उनको तो वृद्धावस्था में कायाकल्प का प्रयोग न कर वृद्धावस्था से प्रारम्भ में ही करना उचित है। सुश्रुत-संहिता में कहा भी है कि :—

पूर्वे वयसि मध्ये वा मनुष्यस्य रसायनम्।
प्रयुञ्जीत भिषक् प्राज्ञः स्निग्ध शुद्धतनोःसदा॥

अर्थात् चतुर वैद्य शुद्ध और स्निग्ध (पञ्च कर्मों से शुद्ध शरीरवाले) मनुष्य के लिये प्रथम अवस्था में या मध्य अवस्था में (युवावस्था में) रसायन का प्रयोग करे। वृद्धावस्था से जिनका शरीर पक गया है, उनके लिये रसायन का प्रयोग व्यर्थ ही होता है, यथा :—

जरापक्व शरीरस्य व्यर्थमेव रसायनम्

परन्तु इससे यह निश्चय न करना चाहिए कि वृद्धावस्था में इन प्रयोगों से कुछ भी लाभ नहीं होगा, अवस्था तो अवश्य बढ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जायगी ; लेकिन उतनी अवस्था की वृद्धि नहीं होगी, जितनी कि इन प्रयोगों को युवावस्था में या प्राथमिक अवस्था में करने से होती। दूसरे इस बात का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए कि रसायन-प्रयोगों का व्यवहार करने से पूर्व शरीर को शुद्ध (पंच कर्मों के द्वारा) अवश्य कर लेवे, नहीं तो इन प्रयोगों से उतना लाभ नहीं होगा जितना कि होना चाहिए। सुश्रुत-संहिता में कहा है कि :—

नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रसायनो विधिः ।
न भाति वाससि क्लिष्टे रङ्गयोग इवाहितः ॥

अर्थात् जिनका शरीर विशुद्ध नहीं है, उनके लिये रसायन-विधि लाभप्रद नहीं हो सकती। जिस प्रकार गंदे और मलिन वस्त्रों में कोई रंग भली प्रकार नहीं चढ़ पाता। अतः शरीर की शुद्धि रसायन प्रयोग से पूर्व आवश्यक है। शारीरिक-शुद्धि के साथ-साथ मानसिक-शुद्धि का होना भी आवश्यक है और धार्मिक आचार-विचारों का भी ध्यान होना तथा पालन होना चाहिये। श्रद्धा और विश्वास के द्वारा हमारा अभिलषित कार्य कुछ सरल अवश्य हो जाता है। इस सम्बन्ध में महर्षि अग्निवेश के विचार चरक-संहिता में इस प्रकार हैं।

यथास्थूलमनिर्वाह्य दोषाञ्शारीर मानसान् ।
रसायनगुणै र्जन्तु र्युज्यते न कदाचन ॥
योगा ह्यायुः प्रकर्षार्था जरारोगनिबर्हणाः ।
मनः शरीर शुद्धानां सिध्यन्ति प्रयतात्मनाम् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तदेतन्न भवेद् वाच्यम् सर्वमेव हतात्मसु ।

अरुजेभ्यो द्विजातिभ्यः शुश्रूषा येषु नास्ति च ॥

अर्थात् शारीरिक एवं मानसिक दोषों को दूर किये बिना जो व्यक्ति रसायन का सेवन करता है, वह रसायन के मोटे-मोटे गुणों को छोड़कर शेष सूक्ष्म गुणों को प्राप्त नहीं करता। आयु को बड़ा करनेवाले तथा बुढ़ापे को दूर करनेवाले रसायन के प्रयोग उन्हीं पुरुषों में सफल होते हैं, जो जितेन्द्रिय हैं, जिनके शरीर और मन शुद्ध हैं। जिनका आत्मा सदा पापों में लिप्त रहता है, उनको रसायन-विधि नहीं सुनानी चाहिये। जो द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) नहीं हैं, तथा पीड़ा से हीन, शारीरिक, मानसिक रोग, रज, तम आदि से रहित हों, जो श्रद्धा से रसायन के गुणों को सुनना नहीं चाहते, उनको भी नहीं बताना चाहिये।

इस प्रकार काया-कल्प रसायनों के प्रयोग में कुछ तप तथा संयम का होना आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक में चरक, सुश्रुत तथा अन्य प्राचीन वैद्यक ग्रन्थों के प्रयोगों को भली प्रकार स्पष्ट कर दिया गया है और कोई भी प्रयोग सरलता के साथ किया जा सकता है, लेकिन कोई भी प्रयोग करने से पूर्व योग्य चिकित्सक की अनुमति तथा उसकी विधि अवश्य होनी चाहिये। किसी प्राणाचार्य के तत्वावधान में ही इनको करना चाहिये, जिससे कि कोई अव्यवस्था होने पर उसका उपचार शीघ्र किया जा सके।

कुछ प्रयोगों के अन्दर ऐसी जड़ी बूटियों का प्रयोग आया है, जिनकी उपलब्धि इस समय असम्भव सी प्रतीत होती है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परन्तु आशा है—सहृदय पाठक उनको साधु महात्माओं तथा चतुर चिकित्सकों की सहायता से जानकर आयुर्वेद के विलुप्त विज्ञान को पुनः उन्नत करेंगे।

अन्त में हम रासायनिक प्रयोगों की महत्ता पर श्री चरक-संहिता की साक्षी देकर इस विषय को समाप्त करेंगे।

यथाऽमराणाममृतं यथा भोगवतांसुधा।
तथाभवन्महर्षीणां रसायन विधिः पुरा॥
न जरां न च दौर्बल्यं नातुर्यं निधनं न च।
जग्मुर्वर्षसहस्राणि रसायन पराः पुरा॥
न केवलं दीर्घमिहायुरश्नुते।
रसायनं यो विधिवन्निषेवते॥
गतिं सदेवर्षि निषेवितां शुभां।
प्रपद्यते ब्रह्म तथेति चाक्षयम्॥

जिस प्रकार देवताओं के लिये अमृत, भोगियों के लिये सुधा थी, उसी प्रकार पूर्व काल में महर्षियों के लिये रसायन विधि थी। उस समय में रसायन को सेवन करनेवाले महर्षि न वृद्धावस्था, न दुर्बलता, न रोग, न मृत्यु को ही (काल से पूर्व) प्राप्त हुए। उन्होंने हजारों वर्षों की आयु भोगी थी। जो पुरुष विधिवत् रसायन का सेवन करता है, उसे केवल दीर्घायु ही नहीं मिलती अपितु वह देवर्षियों से प्राप्त शुभ गति को प्राप्त करता है, ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, उसे अक्षय ब्रह्म के प्राप्त होने से मुक्ति मिल जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रासायनिक प्रयोगों की विधि

चरक-संहिता के अनुसार कायाकल्प रसायनों के प्रयोगों की विधि दो प्रकार होती है । यथा :—

रसायनानां द्विविधं प्रयोगमृऋषयो विदुः
कुटी प्रावेशिकं चैव वातातपिक मेव च ।

अर्थात् ऋषियों ने रसायनों के प्रयोग की दो प्रकार की विधियाँ कहीं हैं । प्रथम वातातपिक और द्वितीय कुटीप्रावेशिक । कुटी प्रावेशिक विधि का प्रभाव वातातपिक विधि की अपेक्षा अधिक होता है । कुटी में स्थित रहकर जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है उसे कुटी प्रावेशिक विधि कहते हैं और जिन प्रयोगों में किसी कुटी विशेष की आवश्यकता नहीं पड़ती, जंगलों तथा उपवनों में रहकर ही संयमी मनुष्य कायाकल्प रसायनों का सेवन करता है उसे वातातपिक विधि कहते हैं । कुटी प्रावेशिक की विधि तथा कुटी-निर्माण प्रकार इस प्रकार है :—

नृप वैद्य द्विजातीनां साधूनां पुण्य कर्मणाम् ।
निवासे निर्भये शास्ते प्राप्योपकरणे पुरे ॥
दिशि पूर्वोत्तरस्यां तु सुभूमौ कारयेत् कुटीम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विस्तारोत्सेध सम्पन्नां त्रिगर्भां सूक्ष्म लोचनाम् ॥
घनभित्तिमृतुसुखां सुस्पष्टां मनसः प्रियाम् ।
शब्दादीनामशस्तानामगम्यां स्त्री विवर्जिताम् ॥
इष्टोपकरणोपेतां सज्जवैद्यौषधद्विजाम् ॥

अर्थात् जिस स्थान पर राजा, वैद्य, ब्राह्मण और पुण्य कर्म करनेवाले साधु महात्मा रहते हों, जो स्थान निर्भय और उत्तम हो, जहाँ पर सम्पूर्ण प्रकार की सामग्रियाँ तथा साधन प्राप्त हो सकें, ऐसे नगर में अच्छी भूमि पर पूर्व या उत्तर दिशा में कुटी बनवावे। वह कुटी पर्याप्त लम्बी, चौड़ी, ऊँची होनी चाहिये। इसमें तीन गर्भ (परकोटे) ऐसे हों कि एक के अन्दर दूसरा और दूसरे के उपरान्त तीसरा घर हो। इसमें छोटे-छोटे रोशनदान (झरोखे) हों। इस कुटी की दीवारें मोटी, ऋतु के अनुसार सुख देनेवाली, अत्यन्त प्रकाशयुक्त, मन को लुभानेवाली (मनोहर) अशुभ शब्द आदि की पहुँच के बाहर, स्त्री-रहित, इच्छित साधनों से सुसज्जित और वैद्य, औषध तथा ब्राह्मण लोग जहाँ रह सकें, इस प्रकार की कुटी बनानी चाहिए। इस प्रकार कुटी के निर्मित हो जाने पर निम्न-विधि के अनुसार उसमें प्रवेश करे—

अथोदगयने शुक्ले तिथि नक्षत्र पूजिते ।
मुहूर्तंकरणोपेते प्रशस्ते कृतवापनः ॥
धृति स्मृति बलं कृत्वा श्रद्दधानः समाहितः ।
विधूय मानसान् दोषान् मैत्री भूतेषु चिन्तयन् ॥
देवताः पूजयित्वाग्रे द्विजातींश्च प्रदक्षिणम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवगो ब्राह्मणान्कृत्वा ततस्तां प्रविशेद् कुटीम् ॥
तस्यां संशोधनैः शुद्धः सुखी जातबलः पुनः ।
रसायनं प्रयुञ्जीत ।..................

अर्थात् सूर्य के उत्तरायण होने पर, शुक्ल पक्ष में, उत्तम तिथि, नक्षत्र, मूहूर्त तथा करण में मुण्डन कराकर, श्रद्धा और एकाग्रमन होकर धैर्य तथा स्मृति के बल पर रज, तम आदि दोषों को जीतकर, सब प्राणियों में मैत्री भाव का चिन्तन करते हुए प्रथम देव, ब्राह्मण की पूजा करके देवता, गौ तथा ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा कर कुटी में प्रवेश करे। प्रवेश करने के उपरान्त संशोधन औषधियों से शुद्ध होकर पुनः किंचित् बल प्राप्त कर लेने पर रसायन का प्रयोग करे। रसायन का प्रयोग करनेवाला निम्न प्रयोग के द्वारा अपने कोष्ठ को शुद्ध कर रसायन का सेवन करे।

हरीतकीनां चूर्णानि सैन्धवामलकं गुडम् ।
वचां विडगं रजनीं पिप्पलीं विश्वभेषजम् ॥
पिबेदुष्णाम्बुना जन्तुः स्नेहस्वेदोपपादितः ।
तेन शुद्ध शरीराय कृत संसर्जनायच ।
त्रिरात्रं यावकं दद्यात् पञ्चाहं वाऽपि सर्पिषा ।
सप्ताहं वा पुराणस्य यावच्छुद्धेस्तु वर्चसः ॥
शुद्धकोष्ठं तु तं ज्ञात्वा रसायनमुपाचरेद् ।
वयः प्रकृति सात्मज्ञो यौगिकं यस्य यद् भवेत् ॥

बड़ी हरड़ का चूर्ण, सेंधा नमक, आँवला, गुड़, वच, वायविड़ंग, हल्दी, पीपल और सोंठ इनकी अवस्थानुसार समान मात्रा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लेकर चूर्ण कर कपड़-छान करके गरम पानी के साथ पीना चाहिए। संशोधन देने से पूर्व मनुष्य को स्नेहन तथा स्वेदन (चिकने पदार्थ तथा पसीना लानेवाले प्रयोग) दे देना चाहिए। इस प्रकार शरीर के शुद्ध होने पर पेया (पतले पीने योग्य पदार्थ, मूँग का जूस) आदि। पथ्य के क्रम का अनुष्ठान कर चुकने पर, हीन, मध्यम और उत्तम शुद्धि की दृष्टि से तीन दिन, पाँच दिन, सात दिन जब तक पुराना मल बाहर न हो जावे तब तक यवान्न (जौ का बना भोजन) घी के साथ देना चाहिए। जिस समय कोष्ठ शुद्ध हो जावे उस समय रसायन का उपयोग करे। अवस्था, आदत तथा सात्म्य (अभिरुचि) को समझनेवाले वैद्य को चाहिए कि जिस रोगी के लिये जो रसायन उपयोगी हो, उसी का सेवन करावे। रसायन का उपयोग मनुष्य के लिये क्यों आवश्यक है और इसके न करने से गृहस्थी पुरुषों को क्या हानियाँ होती हैं, इसका भी कुछ विवेचन होना आवश्यक है, चरक संहिताकार ने इसको भली प्रकार प्रदर्शित किया है। अतः मह यहाँ पर उनकी ही युक्तियों को उपस्थित करते हैं।

सर्वे शरीर दोषा भवंति ग्राम्याहारात् अम्ल लवण कटुक क्षार शुष्क शाकमांस तिलपललपिष्टान्न भोजिनां विरूढ़ नव शूकशमीधान्य विरुद्धाऽसात्म्य रूक्ष क्षाराभिष्यन्दि भोजिनां, क्लिन्नगुरुपूति पर्युषित भोजिनां विषमाध्यशनप्रायाणां दिवास्वप्नस्त्रीमद्यनित्यानां विषमातिमात्र व्यायाम संक्षोभित शरीराणां भय क्रोध शोकलोभायास बहुलानामतो निमित्तं हि शिथिली भवन्ति मांसानि, विमुच्यन्ते सन्धयः, विदह्यते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रक्तम्, विष्यन्दते चानल्पं मेदः न सन्धीयतेऽस्थिषु मज्जा, शुक्रं न प्रवर्तते, क्षयमुपैत्योजः स एवं भूतो ग्लायति सीदति निद्रा तंद्रालस्य समन्वितोऽनारतमाशु चैव निरुत्साहः श्वसिति, असमर्थश्चेष्टानां शारीरमानसानाम्, नष्ट स्मृति बुद्धिच्छायो रोगाणामधिष्ठान भूतो न सर्व मायुरवाप्नोति तस्मादेताद् दोषानवेक्षमाणः सर्वान् यथोक्तानहितानपास्याऽऽहार विहारान् रसायनानि प्रयोक्तुमर्हति ॥

अर्थात् जो मनुष्य अत्यन्त खट्टे, नमकीन, कड़वे, क्षार, सूखे शाक, उड़द की दाल, तिल, कल्क, उड़द की पिट्ठी आदि के बने पदार्थों का उपयोग करते हैं, जड़ाये हुए (जड़हन के चावल आदि) अथवा नवीन शूक और शमी धान्यों का सेवन करते हैं, आपस में विरोधी, रुचि (सात्म्य) के प्रतिकूल, रूक्ष क्षार गीलापन उत्पन्न करनेवाले पदार्थों का व्यवहार करते हैं, जो अभिष्यन्दी गुरु, सड़ा तथा बासी भोजन करते हैं, जो दिन में सोते हैं, स्त्री-प्रसंग या शराब का सेवन करते हैं, विषम या अधिक कसरत के कारण शरीर को डुलाते हैं, जो भय, क्रोध, लोभ और आलस्य से पीड़ित होते हैं, उन मनुष्यों में ग्राम्य भोजन के कारण सब दोष उत्पन्न होते हैं। इसी कारण से उनकी मांस-पेशियाँ ढ़ीली पड़ जाती हैं। सन्धियाँ अलग होने लगती हैं। खून जल जाता है, मेदा अधिक परिमाण में बाहर निकल आता है, मज्जा हड्डियों को छोड़ देती है, वीर्य उत्पन्न नहीं होता, ओज क्षीण हो जाता है। इस प्रकार की दशा में मनुष्य ग्लानि से युक्त रहता है, शोक से युक्त रहने लगता है, हमेशा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

निद्रा, तन्द्रा, तथा आलस्य से युक्त रहता है, शीघ्र ही उत्साह और साहस से शून्य होकर थोड़े से कार्य में भी थक जाता है, स्मृति बुद्धि और शोभा नष्ट हो जाती है, उसका शरीर रोगों का घर बन जाता है और सम्पूर्ण आयु को प्राप्त नहीं होता। अतः इन दोषों को देखते हुए पूर्व कथित अपथ्य वाले आहार विहार को छोड़कर मनुष्य रसायन का उपयोग करने के योग्य होता है।

संयतात्मा तथा हिताहित का विचार रखनेवाला मनुष्य अकाल मृत्यु या अकाल जरा (असमय में बुढ़ापे) से युक्त नहीं होता। परन्तु जनसाधारण न तो जितेन्द्रिय ही होते हैं और न वे शास्त्रोक्त स्वस्थ वृत्त का सेवन ही करते हैं। अतः उनके लिये कायाकल्प रसायनों का प्रयोग आवश्यक है।

प्रथम प्रयोग—

पञ्चानां पञ्च मूलानां भागान्दश पलोन्मितान्।
हरीतकी सहस्रं च त्रिगुणामलकम् नवम् ॥
विदारिगन्धां बृहतीं प्रश्निपर्णीं निदग्धिकाम्।
विद्याद्विदारिगन्धाद्यं श्वदंष्ट्रां पञ्चमं गणम् ॥
बिल्वाग्निमन्थ श्योनाकं काश्मर्यमथ पाटलाम् ॥
पुनर्नवा शूर्पपर्ण्यौबलामैरण्डमेव च ॥
जीवकर्षभकौ मेदाः जीवन्तीं सशतावरीम्।
शरेक्षुदर्भकाशानां शालीनां मूलमेव च ॥
इत्येषां पञ्चमूलानां पञ्चानामुपकल्पयेत्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भागान् यथोक्तां स्ववत् सर्वं साध्यं दशगुणेऽम्भसि ॥
दशभागावशेषं तु पूतं तं ग्राहयेद्रसम् ।
हरीतकीश्चताः सर्वाः सर्वाण्यामलकानि च ॥
तानि सर्वाण्यनस्थीनि फलान्यापोथ्य कूर्चनैः ।
विनीयतस्मिन्निर्यूहे चूर्णानीमानिदापयेत् ॥
मण्डूकपर्ण्याः पिपल्याः शङ्खपुष्प्याः प्लवस्यच ।
मुस्तानां सविडंगानां चन्दनागुरुणोस्तथा ॥
मधुकस्यहरिद्रायाबचायाः कनकस्यच ।
भागांश्चतुष्पलान् कृत्वा सूचमैलायास्त्वचस्तथा ॥
सितोपला सहस्रं तु चूर्णितं तुलयाधिकम् ।
तैलस्यद्वयाढकं तत्रदद्यात् त्रीणि च सर्पिषः ॥
साध्यमौडुम्बरे पात्रे तत्सर्वं मृदुनाग्निना ।
ज्ञात्वालेहमदग्धं च शीतं चौद्रेण संसृजेत् ॥
चौद्र प्रमाणं स्नेहार्द्धं तत्सर्वं घृत भाजने ।
तिष्ठेत् संमूर्च्छितं तस्य मात्रां काले प्रयोजयेत् ।
यानोपरुन्ध्यादाहार मेकं मात्रा जरां प्रति ॥
षष्ठिकः पयसाचात्र जीर्णेभोजनमिष्यते ।
वैखानसा बालखिल्या स्तथा चान्येतपोधनाः ॥
रसायनमिदं प्राश्य बभूवुरमितायुषः ।
मुक्ता जीर्णवपुश्चाग्र्यमवापुस्तरुणं वयः ॥
वीत तन्द्राक्लमश्वासाः निरातङ्का समाहिताः ।
मेधास्मृतिबलोपेताश्चिररात्रं तपोधनाः ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्राह्मं तपो ब्रह्मचर्यं चेरुश्चात्यन्त निश्चयाः ।
रसायनमिदं ब्राह्म मायुष्कामः प्रयोजयेत् ॥
दीर्घमायुर्वयश्चाग्र्यं कामांश्चेष्टान् समश्नुते ।

पाँचों पंच मूलों के अलग-अलग दस पल (एक पल बराबर ८ तोले के होता है) लेने चाहिए । बड़ी हरड़ ताजी १ हजार, नया आँवला तीन हजार लेना चाहिए । पहला पंचमूल शालपर्णी प्रश्न पर्णी, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू (बड़े) इन पाँच चीजों का होता है । दूसरा पंचमूल बेल, सोना पाठा, गंभारी पाटला तथा अरणी का होता है । तीसरा पंचमूल, पुनर्नवा, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, बला और एरण्ड का होता है । चौथा पंच मूल जीवक, ऋषभक, मेदा, शतावर तथा जीवनी का होता है । पाँचवा पंच-मूल शर, इक्षु, दर्भ, काश तथा शाली की जड़ का होता है । उपरोक्त दवाइयों को दस गुने पानी में डालकर काढ़ा बनाना चाहिए और पानी का दसवाँ भाग शेष रहने पर स्वच्छ कपड़े से छान लेवे । हरड़ और आँवलों को निकालकर (जो काढ़े में दवाओं के साथ कपड़े की पोटली में बाँधकर कढ़ाई में डाल दिये गये थे) इनकी गुठलियों को बाहर कर देना चाहिए इसके बाद कुचलकर कूर्चनों से इसका रेशा निकाल देवे (हरड़ और आँवले की गुठलियाँ निकालकर बड़े बाल्टे या बाल्टी के मुख पर मजबूत कपड़ा बाँधकर थोड़ा-थोड़ा करके हरड़ और आँवलों को कपड़े के ऊपर रखे और हाथ की हथेली से रगड़े, इससे आँवला तथा हरड़ों का रेशा ऊपर कपड़े में रह जावेगा और बिना रेशे का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भाग नीचे बाल्टे या बाल्टी में आ जावेगा)। रेशे निकल जाने पर हरड़ और आँवले के शुद्ध भाग को (जो कपड़े से घिसने के बाद रेशा-रहित हिस्सा है) काढ़े में डाल देवे। साथ ही इन चीज़ों का चूर्ण भी काढ़े में मिला देवे। मण्डूक पर्णी, छोटी पीपल, शंखपुष्पी, प्लव (केवटी, मोथा, सुगन्ध तृण) मोथा बायविडंग, लाल चन्दन, अगर, मुलहटी, हल्दी, वच, कनक (नाग केसर) छोटी इलायची और दाल चीनी प्रत्येक चार पल (३२ तोले) मिश्री १००० पल (८००० तोले) तेल दो आढ़क (१६ सेर) घी तीन आढ़क (२४ सेर)। इन सबको औडुम्बर (ताँबे) के कलई किये बर्तन में धीमी आँच से पकाना चाहिए। (चलाते समय कलई के बर्तन में पकावे और लकड़ी की बड़ी करछुल से चलावे)। जब लेह अच्छी प्रकार बन जावे और जले नहीं तब उतार लेना चाहिए। ठण्ढा होने पर इसमें शहद मिलाना चाहिए। शहद की तोल घी और तेल की मिली हुई तोल से आधी होनी चाहिए (अर्थात् २½ आढ़क = २० सेर)। इन सबको घृत से भावित पात्र में रखना चाहिए। मात्रा और समय को देखकर इस अवलेह का उतना सेवन करना चाहिए कि जितना पच जावे और भूख का नाश न करे। सेवन करने-वाला पुरुष भोजन आदि का पूर्ववत् व्यवहार करे। इस रसायन के जीर्ण होने पर (परिपाक हो जाने पर) दूध के साथ साठी के चावल खाने चाहिए। वानप्रस्थी, बालखिल्य (जिन्होंने बाल्यय में ही वानप्रस्थाश्रम का सेवन किया है) और अन्य तपस्वी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

लोगों ने इस रसायन के सेवन से अपार आयु प्राप्त की है। इसके व्यवहार करने से मुनि लोग तन्द्रा, क्लम (थकान) श्वास (श्रम से उत्पन्न) से रहित नीरोग, मेधा, स्मृति तथा बल से युक्त होकर वहुत दिनों तक, ब्रह्म, तप तथा ब्रह्मचर्य का सेवन कर सके। दीर्घायु को चाहनेवाले व्यक्ति को चाहिए कि इस रसायन का उपयोग करे। इसके सेवन से दीर्घायु, उत्तम अवस्था, तथा मनचाही कामनायें प्राप्त होती हैं।

द्वितीय प्रयोग—

यथोक्त गुणानामामलकानां सहस्रं पिष्टस्वेदन विधिना पयस ऊष्मणा सुस्विन्नमनातप शुष्क मनस्थि चूर्णयेत् तदामलक सहस्रं स्वरसपरिपीतं स्थिरा पुनर्नवा जीवन्ती नागबला ब्रह्मसुवर्चला मण्डूकपर्णी शतावरी शंखपुष्पी पिप्पली वचा विडंग स्वयं गुप्ताऽमृता चन्दना गुरु मधुक मधूक पुष्पोत्पल पद्ममालतीयुवती यूथिका चूर्णाष्टभाग संयुक्तं पुनर्नाग बलासहस्रपल स्वरस परिपीत मनातप शुष्कं द्विगुणित सर्पिषाक्षौद्र सर्पिषा वा क्षुद्रगुडाकृतिं कृत्वा शुचौ दृढ़े घृतभाविते कुम्भे भस्मराशेरधः स्थापयेत् अन्तर्भूमेः पक्षं कृतरक्षाविधानमथर्ववेदविदा पक्षात्यये चोद्धृत्य कनकरजत ताम्रप्रवाल कालायस चूर्णाष्टभाग संयुक्त मर्ध कर्षं वृद्धया यथोक्तेन विधिना प्रातः प्रातः प्रयुञ्जानोऽग्नि बलमभिसमीक्ष्य जीर्णे च षष्टिकंपयसा ससर्पिष्क मुपसेव्यमानो यथोक्तान् गुणान् समश्नुते इति।

इदं रसायनं ब्राह्मं महर्षिगण सेवितम्।
भवत्यरोगो दीर्घायुः प्रयुञ्जानो महाबलः॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कान्तः प्रजानां सिद्धार्थश्चन्द्रादित्य समद्युतिः ।
श्रुतं धारयते सत्वमार्षं चास्य वर्तते ॥
धरणीधर सारश्च वायुनासम विक्रमः ।
सभवत्यविषं चास्य गात्रे सम्पद्यते विषम ॥

प्रथम प्रयोग में कहे गये गुणों से युक्त एक हजार आँवलों को पिष्टस्वेदन विधि के द्वारा दूध की गरमी से स्विन्न करे (आँवलों को एक पोटली में बाँधकर उस पोटली को एक वाल्टे में लटकावे और वाल्टे में दूध भरदेवे पर यह ध्यान रक्खे कि उबाल आने पर भी दूध पोटली में न लगे अर्थात् दूध की भाप में ही पकावे)। जब भली प्रकार से स्विन्न हो जावें तब इनकी गुठली निकालकर इनको छाया में सुखा लेवे सूखने पर उनका चूर्ण बना लेवे और उसको एक हजार आँवलों के रस में भिगो देवे। रस के सूखने पर शालपर्णी, पुनर्नवा, नागबला, ब्रह्म-सुवर्चला, (ब्राह्मी) मण्डूकपर्णी, शतावरी, शंखपुष्पी, छोटी-पीपल वच वायविडगं, कौंच, गिलोय, लालचन्दन, अगर, मुलहटी, महुए के फूल, नीलकमल, श्वेतकमल, मालती, मोगरा, जुही इनका चूर्ण मिलाना चाहिये। इन सबका चूर्ण स्वरस से भावित आंवले के चूर्ण का ½ भाग होना चाहिये। फिर इस सारे चूर्ण में एक हजार नागबला के रस को डालकर छाया में सुखाना चाहिए। सूखने पर चूर्ण से दुगुना घी और चूर्ण के बराबर शहत मिलावे और छोटी-छोटी डलियां बना लेवे तथा घी से भावित दृढ़पात्र में रखकर उपलों की राख में भूमि के अन्दर गाड़ देना

15247

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाहिये। अथर्व वेद के जाननेवालों से रक्षाविधान कराकर गडढे में गाड़ देवे। १५ दिन के पीछे निकालकर सोने, चाँदी, ताम्बे, मूंगे, तथा फौलाद की भस्मों को औषध के आठवें भाग के बराबर मिलावे (भस्मों का योग औषध की तौल का ⅛ होना चाहिये)। इस रसायन को कुटी प्रावेशिक विधि के अनुसार आधा कर्ष (१ तोले) से प्रारम्भ कर धीरे-धीरे आधा कर्ष बढ़ाते हुये प्रातः सेवन करना चाहिए। इसका प्रयोग करते समय बलका ध्यान रखना चाहिये। जब यह औषध जीर्ण हो जावे तब घी से मिश्रित साठी के भात को दूध के साथ खाना चाहिए। इस ब्राह्म रसायन का महर्षियों ने सेवन किया था। इसके सेवन से पुरुष नीरोग, दीर्घायु, बड़ा बलशाली, जनता में प्रिय, सुन्दर, तथा मनोवाञ्छित फल को प्राप्त होनेवाला होता है। वह चन्द्रमा और सूर्य के समान कान्तियुक्त होता है, सुनते ही किसी बात को याद कर लेता है, उसका मन आर्ष विचारों का होजाता है। वह पर्वत के समान भीमकाय और वायु के समान पराक्रमी होजाता है। इसके शरीर में पहुँच कर विष भी अमृत में परिवर्तित होजाता है।

तृतीय-प्रयोग —

बिल्वोऽग्निमन्थः श्योनाकः काश्मर्यं पाटलिर्बला।
पर्ण्यश्चतस्रः पिप्पल्यः श्वदंष्ट्रा बृहतीद्वयम्॥
शृङ्गी तामलकी द्राक्षा जीवन्ती पुष्करा गुरुः।
अभया चामृता ऋद्धिर्जीवकर्षभकौ शटी॥
मुस्तं पुनर्नवा मेरा एलाचन्दन मुत्पलम्।
विदारी वृषमूलानि काकोली काकनासिका॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एषां पलोन्मितान् भागान् शतान्यामलकस्यच ।
पञ्च दद्यात्तदैकत्र जलद्रोणेविहाचयेत् ॥
ज्ञात्वा गतरसान्येतान्यौषधान्यथतं रसम् ।
तच्चामलक मुद्धृत्य निष्कुलं तैल सर्पिसोः ॥
पलद्वादशकेभृष्ट्या दत्वा चार्धतुलांभिषक् ।
मत्स्यण्डिकायाःपूताया लेहवत् साधु साधयेत् ॥
षट्पलं मधुनश्चात्र सिद्ध शीते प्रदापयेत् ।
चतुष्पलं तुगाचीर्याः पिप्पली द्विपलं तथा ॥
पलमेकं निदध्याच्च त्वगेलापत्र केशरात् ।
इत्ययं च्यवनप्राशः परमुक्तं रसायनम् ॥
कासश्वास हरश्चैव विशेषेणो पदिश्यते ।
चीण चतानां वृद्धानां बालानां चागंवर्धनः ॥
स्वरचय मुरोरोगं हृद्रोग्रं वात शोणितम् ।
पिपासां मूत्र शुक्रस्थान् दोषांश्चाप्ययकर्षंति ।
अस्यमात्रां प्रयुञ्जीत मोपरुन्ध्यान्नभोजनम् ॥
अस्यप्रयोगाच्च वनःसुवृद्धोऽभूत् पुनर्युवा ।
मेधांस्मृतिं कान्ति मनामयत्व मायुः प्रकर्षं बलमिन्द्रियाणाम् ।
स्त्रीपुप्रहर्षं परमग्नि वृद्धिं वर्ण प्रसादं पवना नुलोम्यम् ॥
रसायनस्यास्य नरः प्रसादाल्लभेत जीर्णोऽपि कुटी प्रवेशात् ।
जराकृतं रूपमपास्य सर्वं विभर्ति रूपं नव योवनस्य ॥

बेल, अरणी की छाल, सोनापाठा, गम्भारी की छाल, पाढ़ल की छाल, खरैंटी, शालपर्णी, प्रश्नपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पिप्पली, गोखरू, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, काकड़ासिंगी, भुईं आँवला, द्राक्षा, जीवन्ती, पुष्करमूल, अगर, हरड़ बड़ी, गिलोय, ऋद्धि, जीवक, ऋषभक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा, मेदा, छोटी इलायची, लाल चन्दन, कमलगट्टा, विदारीकन्द, काकोली का नासा (कौआ ठोड़ी) प्रत्येक एक २ पल लेवे और आँवले १००, इनको एक द्रोण (३२ सेर) जल में पकावे। पकाते समय आँवलों को पोटली में बाँधकर काढ़े में छोड़ देवे। जब औषधियों का रस क्वाथ में आजावे और औषधियाँ नीरस हो जावें तब आँवलों की पोटली को निकालकर काढ़े को छान लेवे। इन आँवलों की गुठलियाँ निकालकर कपड़े में से आँवलों को निकाल-कर हाथ से रगड़कर छानना चहिये, जिससे रेशे निकल जायें और नरम पिट्ठी सी बन जावे। इन आँवलों की पिट्ठी को ६ पल (४८ तोले) तेल मीठे तथा ६ पल (४८ तोले) घी में अलग-अलग भूने और इतना भूने कि आँवलों का रंग लाल सा हो जावे। क्वाथ में ५० पल (४०० तोले) राब या दानेदार खाँड़ मिलाकर लेह को पकावे। पकाने से पूर्व आँवलों की भुनी हुई पिट्ठी को इस काढ़े में (जो छना हुआ है) मिला देवे। जब पाक तय्यार हो जावे तो उतार ले। ठण्डा होने पर ६ पल (४८ तोला) शहद, वंशलोचन ४ पल (३२ तोला), पीपल छोटी दो पल (१६ तोला) दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेसर प्रत्येक दो-दो तोला मिला दे (इस प्रक्षेप को पहले खूब पीसकर कपड़े से छानकर मिलाना चाहिये) । पकाते समय लकड़ी के कौंचे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(करछुल) से चलाता जावे। यह च्यवनप्राश उत्तम रसायन है। यह विशेषकर खाँसी, तथा श्वास को नष्ट करता है। क्षीणक्षत, वृद्ध एवं बालकों के अंगों को बढ़ाता है। स्वरक्षय, हृदयरोग, वातरक्त, पिपासा, मूत्र स्थान, शुक्र स्थान के रोगों (वीर्य दोषों) को नष्ट करता है। इसकी मात्रा उतनी खानी चाहिये, जिससे भूख नष्ट न हो। इसके प्रयोग से वृद्ध च्यवन ऋषि भी पुनः युवावस्था को प्राप्त हुए थे। इस रसायन के प्रयोग से, मेधा, स्मृति, कान्ति, नीरोगता, आयु की दीर्घता, इन्द्रियों की सबलता, मैथुन में समर्थता, देहाग्नि की वृद्धि, वर्ण की निर्मलता और वायु की अनुलोमता प्राप्त होती है। कुटी प्रावेशिक विधि से इस रसायन का उपयोग करनेवाला पुरुष वृद्धावस्था में भी बुढ़ापे के चिह्नों से रहित होकर नई जवानी के रूप को धारण करता है। (इसकी मात्रा प्रायः १ तोले से दो तोले तक होती है)।

चतुर्थ प्रयोग—

अथामलकहरीतकीनामामलक बिभीतकानां हरीतकी विभीतका नामामलक हरीतकी विभीतकानां वा पलाशत्वगवद्धानां मृदा वलिप्तानां कुकूलके स्विन्नाना मकुलकानां पल सहस्रमुलूखले संपोथ्यदधिघृत मधुपलल तैल शर्करासम्प्रयुक्तं भक्षयेदन्नभुग् यथोक्तेन विधिना, तस्यान्ते यवाग्वादिभिः प्रत्यवस्थापन मभ्यङ्गोत्सादनं सर्पिषा यव चूर्णैश्च अपिच रसायन प्रयोग प्रकर्षो द्विस्तावदग्नि बल मभीसमीक्ष्य प्रतिभोजनं यूषेणपयसा। वाषष्टिकः ससर्पिष्कोऽतः परं था सुख विहारः कामभक्ष्यः स्यात्। अनेन प्रयोगेण ऋषयः पुनर्युवत्वमवाप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बभूवुश्चानेक वर्ष शतजीविनो निर्विकाराः परं शरीर बुद्धीन्द्रिय बल समुदिताः चेरुश्चात्यन्तनिष्ठं तपः ।

(१) आँवले और हरड़ (२) आँवले और बहेड़े (३) हरड़ और बहेड़े (४) आँवला, हरड़, बहेड़ा इन चारों में से किसी एक योग को लेकर ढाक की गीली छाल से लपेट कर, ऊपर से मिट्टी का लेप चढ़ाकर भुस या तुष की आग में स्विन्न (स्वेदन) करे । गरम हो जाने पर इनकी गुठलियाँ निकालकर एक हज़ार पल मात्रा (तोल) लेकर ऊखल में कूट ले । इनमें दही, घी, शहद, तिलकाल्क (पिट्ठी) तेल, शर्करा मिलाकर कुटी प्रावेशिक विधि को करे । इसके सेवन के समय दूसरा किसी प्रकार का कोई अन्न आहार नहीं खाना चाहिए । पश्चात् यवागू यूष (मूंग आदि का) पेया (अन्न की पनील की चीज़) आदि देकर पहले के समान भोजन पर लाना चाहिए । प्रतिदिन घी की मालिश और जौ के चूर्ण से उबटन करे (प्रयोग करने के बाद) । अग्नि बल को देखते हुए इस रसायन को दो ही बार सेवन करे । आहार के लिये घी युक्त सांठी को यूप या दूध के साथ खाना चाहिए । इसके पश्चात् यथेच्छ आहार विहार का सेवन करना चाहिए । इस प्रयोग से ऋषियों ने पुनः युवावस्था को प्राप्त किया था—अनेक वर्षों की आयु भोगी थी । वे बहुत दिनों तक नीरोग और शरीर वृद्धि, इन्द्रिय बल से युक्त रहे, वे अत्यन्त व्रत तथा निष्ठा द्वारा तपस्या करते रहे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पाँचवाँ प्रयोग—

हरीतक्यामलकविभीतक पञ्चपञ्चमूल नियूंहे पिप्पली मधुक मधूक काकोली क्षीर काकोल्यात्मगुप्ता जीवकर्षभक क्षीरशुक्ला कल्क संप्रयुक्तेन च सर्पिष्कुम्भं साधयित्वा प्रयुञ्जानोऽग्नि बलसमां मात्रां च जीर्णे च क्षीर सर्पिर्भ्यां शालिषष्टिक मुष्णोदकानुपानमशनम् जरा व्याधिपाप्माभिचार व्यपगतभयः शरीरेन्द्रिय बुद्धि बलमतुल मुप-लभ्या प्रतिहत सर्वारम्भः परमायुरवाप्नुयात् ।

हरड़, बहेड़ा, आँवला, पाँचों पञ्चमूल (जो प्रथम प्रयोग में वर्णित हैं) इनका काढ़ा बनाव और इस काढ़े का एक भाग तथा छोटी पीपल, मुलहटी, महुआ, काकोली क्षीर काकोली, कौंच के बीज, जीवक, ऋषभक, सिंघाड़े, का कल्क (सबको सिल पर महीन पीसकर चटनी बना ले उसी को कल्क कहते हैं) का एक भाग, विदारी कन्द का स्वरस (विदारी कन्द को पीसकर उसका रस जिसमें पानी न मिला हो) एक भाग लेकर आठ गुने दूध के साथ मिला देवे और दुगुने घी को लेकर उपरोक्त सब चीजों के द्वारा घृत सिद्ध करे। जठराग्नि के बल के अनुसार इसका उपयोग करे। जीर्ण होने पर दूध और घी के साथ शालि (हेमन्त धान) या सांठी का भात खाना चाहिए। अनुपान गरम जल होना चाहिए। इसके प्रयोग से बुढ़ापा, पाप, रोग तथा अभिचार का भय नहीं रहता। इसके सेवन से देह, इन्द्रिय, और बुद्धि का अतुल बल होजाता है, सब कार्य बिना बाधा के पूर्ण होते हैं तथा पूर्ण आयु होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

षष्ठ-प्रयोग

हरी तक्यामलक विभीत हरिद्रा स्थिरा वचा (बला) विडङ्गामृत वल्ली विश्व भेषज मधुक पिप्पली सोम बल्कसिद्धेन क्षीर सर्पिषा मधुशर्क राभ्यामपि च सक्षीयामलक स्वरस शतपल परिपीत मामलक चूर्णमयश्चूर्ण चतुर्भाग संप्रयुक्तं पाणितल मात्रं प्रातःप्रातः प्राश्य यथोक्तेनविधिना सायं मुद्गयूषेण पयसा वा सर्पिष्कं शालिषष्टिक मश्नीयात् त्रिवर्ष प्रयोगादस्य वर्षशतमजरं वयस्तिष्ठति श्रुत मनतिष्ठते सर्वामयाः प्रशाम्यन्ति विषभविषी भवतिगात्रे गात्र मश्मवत् स्थिरी भवति, अदृश्यो भूतानां भवति।

हरड़, बहेड़ा, आँवला प्रश्नपर्णी, हल्दी, खरैंटी, बायविडंग, गिलोय, सोंठ, मुलहटी, पिप्पली सोमवल्क (श्वेत खदिर) इनके काढ़े से बनाये गये (पकाये गये) दूध में से बनाये घी के साथ मधु और शर्करा मिलाकर तथा एकसौ आँवलों के चूर्ण को आँवलों का स्वरस मिलाकर इस चूर्ण से चतुर्थांश लौह-भस्म मिलाकर दोनों को सम्मिलित करके प्रतिदिन प्रातः कुटी प्रावेशिक विधि से एक कर्ष (तोला) मात्रा में सेवन करे। सायंकाल घी मिश्रित शालि या साँठी के भात को दूध या मूँग के यूष के साथ खाना चाहिये। इस प्रकार तीन वर्ष तक इस प्रयोग को करने पर एकसौ वर्ष तक बिना बुढ़ापे के आयु रहती है, पढ़ा, सुना सब याद रहता है, सब रोग नष्ट हो जाते हैं, शरीर में विष निर्विष हो जाता है, शरीर पत्थर के समान दृढ़ हो जाता है,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्राणियों से अदृष्ट हो जाता है। अर्थात् देवताओं के समान अत्यन्त तेजस्वी और प्रकाशमान हो जाता है।

सप्तम-प्रयोग

आमलकानां सभूमि जानां कालजानामनुपहत गन्धवर्ण रसाना मापूर्ण रस प्रमाण वीर्याणां स्वसरसेन पुनर्नवाकल्क संप्रयुक्तेन सर्पिषः साधयेदाढकम्, अतः परं विदारी स्वरसेन जीवन्ती कल्क संप्रयुक्तेन, अतःपरं चतुर्गुणेन पयसा बलातिबला कषायेण शतावरीकल्क संयुक्तेन, अनेन क्रमेणौकक्रं शतपाकं सहस्रपाकं वा शर्करात्चौद्र चतुर्भाग संप्रयुक्तम् सौवर्णे राजते मार्तिके वा शुचौदृढ़े घृतभावित कुम्भे स्थापयेत्, तद्यथोक्तेन विधिना यथाग्नि प्रातः प्रातः प्रयोजयेत्, जीर्णेच क्षीरसर्पिभ्यां शाषिष्टिक मश्नीयात्। अस्यत्रिवर्षप्रयोगाद्वर्ष शतंवयोऽजरं तिष्ठति, श्रुत मयतिष्ठते, सर्वाभयाः प्रशाम्यन्ति, अप्रतिहत-गतिः स्त्रीष्व पत्यवान्भवतीति।

बृहच्छरीरं गिरिसार सारं स्थिरेन्द्रियं, चाति बलेन्द्रियं च।
अधृष्यमन्यैरतिकान्तरूपं, प्रशस्ति पूजासुख चित्तभाक्च॥
बलंमहद् वर्णा विशुद्धिरग्या स्वरो घनौघस्तनितानुकारी।
भवत्यपत्यं विपुलं स्थिरं च समश्नतो योगमिमं नरस्य॥

अच्छी भूमि में यथा समय पैदा हुए, गन्ध, वर्ण और रससे युक्त तथा रस, वीर्य (शक्ति) विपाक (पकना) से परिपूर्ण आँवलों का स्वरस आढ़क (६४ सेर) लेवे और पुनर्नवा का कल्क दो सेर लेवे तथा इनके द्वारा आठ सेर घी को पकावे इसी प्रकार विदारी कन्द के स्वरस और जीवन्ती के कल्क द्वारा घी का एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आढक (८ सेर) सिद्ध करे। इसी प्रकार चार गुने दूध और बला तथा अति बला के काढ़े से तथा शतावर के कल्क से घृत सिद्ध करे। इस प्रकार से एक-एक घी का शतपाक (सौ वार पाक) या हज़ार वार पाक करे। इस प्रकार से साधित घृत में चौथाई शक्कर, तथा शहद (प्रत्येक चतुर्थांश) मिलाकर घृत से भावित पवित्र तथा मज़बूत स्वर्ण, चाँदी या मिट्टी के बर्तन में इस घी को रख देवे फिर कुटी प्रावेशिक विधि से अपनी पाचन शक्ति के अनुसार प्रातःकाल प्रतिदिन खावे । औषध के पचने पर घी और दूध के साथ शालि (साठी) का भात खाना चाहिए। इस प्रयोग को तीन साल तक खाने से बिना वृद्धावस्था के आयु सौ वर्ष तक बनी रहती है। पढ़ा सुना सब याद रहता है, सब रोग नष्ट होजाते हैं बे रोक-टोक से संसार में विचरण करता है, स्त्रियों में अपत्य कर होता है। इस प्रयोग के सेवन से शरीर लम्बा, चौड़ा, तथा लोहे के समान दृढ़ और अति बलवान हो जाता है। इन्द्रियाँ बलशाली और मज़बूत हो जाती हैं। कोई इसको तिरस्कृत नहीं कर सकता। मनुष्य सुन्दर हो जाता है। उत्तम पूजा, उत्तम सुख, और उत्तम मन से युक्त होता है। बल अधिक हो जाता है। वर्ण अत्यन्त निर्मल हो जाता है। स्वर घन गर्जन के समान होता है, सन्तान दृढ़ होती है।

आठवाँ प्रयोग—

आमलक सहस्रं पिप्पली सहस्र संप्रयुक्तम् पलाश तरुणक्षारोद-कोत्तरंतिष्ठेत् तदनुगत क्षारोदक मनातप शुष्क मनस्थि चूर्णी कृतं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चतुर्गुणाभ्यां मधुसर्पिभ्यां संनीप शर्करा चूर्णं चतुर्भाग सम्प्रयुक्तम् घृत भाजनस्थं षण्मा सानूस्थापमेदन्तभूमेः। तस्योत्तर कालमग्नि बलसमा मात्रायौर्वाह्लिकः प्रयोग सात्म्या पेक्षश्चाहार विधिर्नाऽपराह्लिकस्तस्य प्रयोगाद्वार्षशत मजरं वयस्तिष्ठति।

एक हज़ार आँवले तथा एक हज़ार छोटी पीपल को तरुण (युवावस्था के) ढाक के क्षारोदक में डुबाकर रक्खे। (ढाक का क्षारोदक इस प्रकार बनता है कि युवा ढाक को जलाकर राख कर लेवे। राख में ६ गुना पानी डालकर विलोड़ना चाहिये, फिर अगले दिन इस पानी को धीरे-धीरे राख से नितार ले। इस प्रकार २१ बार करना चाहिये। इस सारे नितारे हुए पानी को पकाकर क्षार कर लेते हैं। नितरे हुए पानी में क्षार का सब भाग आ जाता है। अतः इसे क्षारोदक कहते हैं।) जब क्षार का जल इनके अन्दर खूब प्रविष्ट हो जावे तब इनको छाया में सुखाकर गुठलियाँ निकालकर चूर्ण बना लेवे। इसमें चार गुणा घी और शहद मिलावे और चूर्ण की चौथाई शकर मिलावे। अब इसको एक पात्र में रखकर ६ मास तक ज़मीन में गाड़ देवे। ६ मास बाद अग्नि बल के अनुसार इसको प्रातःकाल खावें। जो भोजन सात्म्य अनुकूल होवे, उसी का सेवन करे। दिन के उत्तर भाग में सेवन न करे। इसके प्रयोग से १०० वर्ष तक जरा से रहित आयु रहती है। अन्य गुण सातवें प्रयोग के समान जानने चाहिये।

नवाँ प्रयोग—

आमलक चूर्णाढक मेंकविंशति रात्र मामलक सहस स्वरस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

परिपीतं मधुघृता ढकाभ्यां द्वाभ्यामेकीकृतमष्टभाग पिप्पलीकं शर्करा चूर्णं चतुर्भाग सम्प्रयुक्तम् घृतभाजनस्थं प्रावृषि भस्मराशौ निदध्यात्त-द्वर्षान्ते सात्म्यापेक्षी प्रयोगयेदस्य प्रयोगाद् वर्ष शतमजरमायुस्तिष्ठति ।

८ सेर आँवलों के चूर्ण की एक हज़ार आँवलों के स्वरस में २१ दिन तक भावना देवे। इसमें अलग-अलग १६ सेर घी और १६ सेर शहद मिलावे। इन सबका अष्टमांश छोटी पीपल का चूर्ण और सम्पूर्ण चूर्ण का (अन्त में चूर्ण की जो तोल हो उसका) चतुर्थांश शक्कर मिलावे और घी से भावित पात्र में रख देवे। इस पात्र को बरसात में भस्म के ढेर में गाड़ देवे। वर्षा व्यतीत होने पर सात्म्य भोजी होने पर इसका प्रयोग करे। इसका व्यवहार करने से मनुष्य की अवस्था १०० वर्ष तक बिना बुढ़ापे के रहती है। इसके अन्य गुण वही जानने चाहिये तो सातवें प्रयोग में प्रदर्शित किये गये हैं।

दशम प्रयोग—

विडंग तण्डुल चूर्णानामाढकं पिप्पली तण्डुलाना मध्यर्धाढकं सितोपलासर्पिस्तैल मध्वाढकैः षड्भिरेकी कृतम् घृतभाजनस्थं प्रावृषि-भस्मराशौनिध्यात्। अन्यत् सर्वं सप्तम नवम प्रयोग वज्ज्ञेयम् ॥

छिलके रहित विडंग का चूर्ण ८ सेर, पीपली के बीज का चूर्ण १२ सेर तथा मिश्री, घी, तैल और शहद प्रत्येक आठ-आठ सेर लेवे और इन सबको मिलाकर (इन छः चीजों को) घी से भावित पात्र में बरसात के प्रारम्भ में भस्म के ढेर में गाड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देवे। अन्य विधि सातवें और ६ वें प्रयोग के समान जाननी चाहिए।

एकादश प्रयोग—

यथोक्त गुणानामामलकानां सहस्रमार्द्र पलाशद्रोण्यां सपिधानायां वाष्प मनुद्वमन्त्या मारण्य गोमयाग्निभिरुपस्वेदयेत्, तानि सुस्विन्न शीतान्युद्धृत कुलकान्यापोथ्याढकेन पिप्पली चूर्णानामाढकेन च विडंग तण्डुल चूर्णानामध्यर्धेन चाढ़केन शर्करायाः द्वाभ्यां द्वाभ्यामाढकाभ्यां तैलस्य मधुनःसर्पिषश्च संयोज्य शुचौ दृढ़े घृत भाविते कुम्भे स्थापयेदेक विंशतिरात्रमत ऊर्ध्वं प्रयोगः, अस्य प्रयोगाद्वर्ष शत मजरमायुस्तिष्ठति।

पूर्वोक्त गुण वाले एक हज़ार आंवलों को लेकर ढाक की गीली लकड़ी से बनी तथा ढाक के ही ढकनवाली नांद भरकर ढक्कन लगाकर जंगली उपलों की आग पर ऐसे गरम करे कि उसकी वाष्प बाहर न जावे। जिस समय आँवले सीज जावें और ठण्डे हो जायँ तब निकालकर कूट-कूटकर गुठली बाहर कर देनी चाहिए। इनके रेशे साफ़ करके इनमें पिप्पली का चूर्ण ८ सेर, विडंग-तंडुल चूर्ण ८ सेर, शकर १२ सेर तैल १६ सेर शहद १६ सेर और घी १६ सेर मिलाकर घी से भावित स्वच्छ और दृढ़ पात्र में रख देना चाहिए इक्कीस दिन के पीछे इसका प्रयोग करना चाहिए। इसके प्रयोग से जरा रहित आयु एक सौ वर्ष की होती है और सब पूर्व की भाँति लाभ होते हैं (जो सातवें प्रयोग में हैं)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वादश प्रयोग—

धन्वीन कुशास्तीर्णे स्निग्ध कृष्ण मधुर मृत्तिके सुवर्ण वर्ण मृत्तिके वा व्यपगत् विषश्वापद पवन सलिलाग्नि दोषे कर्षण वल्मीक श्मशान चैत्योपरावसथ वर्जिते देशे यथर्तु सुखपवन सलिलादित्य सेविते जाता न्यनिम्नेऽनुपहता न्यनाध्यारूढ़ा न्यबालान्यजीर्णा न्यधिगतवीर्याणि पुराणपर्णान्य सञ्जातान्यपर्णानि तपसि तपस्ये वा मासे शुचिः प्रयतः कृतदेवार्चनः स्वस्ति वाचयित्वा द्विजातीन बले सुमुहूर्ते नागबला मूलान्युद्धरेत्, तेषां सुप्रक्षालितानां त्वक् पिण्डमाम्नमात्रं अक्षमात्रं वाश्लक्ष्णपिष्ट मालोड्य पयसा प्रातः प्रयोजयेत्, चूर्णी कृतानि वापिवेत् पयसा, मधुसर्पिभ्यां वा संयोज्य भक्षयेत् जीर्णे च क्षीरसर्पिर्भ्यां शालि-षष्टिक मश्नीयात् संवत्सर प्रयोगादस्य वर्षशतमजरं वयस्तिष्ठतीति समानं पूर्वेण।

जांगल देश में उत्पन्न, कुशा से व्याप्त भूमि में, चिकनी, काली और मधुर मिट्टी में या सुवर्ण के समान रंग की मिट्टी में उत्पन्न विष हिंस्र जन्तु, वायु, जल तथा अग्नि के दोषों से रहित, जहाँ पर हल आदि न चला हो, बामी (वमीठ) श्मशान, चैत्य (देवतायतन), जहाँ ऊसर भूमि न हो, जो रहने की भूमि न हो, ऋतु के अनुसार जहाँ पर वायु, पानी धूप पहुँचती हो, ऊँचाई पर उत्पन्न, पाले आदि से रहित, कीड़ों से न खाई हुई, पास के वृक्षों और लताओं से न घिरी हुई, न तो बहुत छोटी और न बहुत पुरानी (तरुण) वीर्य से भरपूर, जिसके पुराने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पत्ते झड़ गये हों, नये पत्ते अभी उत्पन्न न हुए हों ऐसी नागबला (गंगेरन) को माघ या फाल्गुन मास में उखाड़े। उखाड़ते समय वैद्य संयम और पवित्र मनसे देवताओं की पूजा करके मंगल पाठ करके, ब्राह्मणों की पूजा करके उत्तम मूहूर्त में नागबला की जड़ को उखाड़े। इन जड़ों को पानी से भली प्रकार धोकर इनकी त्वचा १ पल ८ तोले लेकर या अक्ष (कर्ष दो तोले) भर लेवे इस छाल को खूब बारीक पीसकर दूध में मिलाकर पीवे आधा रस छाल का चूर्ण करके दूध के साथ पीवे। अथवा घी के साथ शालिया साँठी का भात खावे। एक साल तक इस इस प्रकार प्रयोग करने पर एकसौ वर्ष की बुढ़ापे से रहित आयु होती है और गुण सातवें प्रयोग में लिखित गुणों के समान जाने।

त्रयोदश प्रयोग—

बलाति बला चन्दना गुरुधवतिनिशखदिर शिंशपासनस्वरसाः पुनर्नवान्तारचोषधयो दशनाग बलया व्याख्याता। स्वरसा नामलाभे त्वयं स्वरसविधिः—चूर्णानामाढकमाढक मुदस्याहीरा त्रस्थितं मृदितपूतं स्वरस वत् प्रयोज्यम्।

बला (खरैंटी) अति बला (ककड़ी) अगर, चन्दन, धव, तिनिश (आबनूस) खदिर शिंशपा (शीशम) असन तथा पुनर्नवातक गिनी हुई अमृता (गिलोप) अमया (हरड़) धात्री (आंवला) मुक्ता रास्ना (रायसन) श्वेता (दुर्वा अपराजिता) अतिरसा (शतावटी, माडूकपर्णी, शालिपर्णी और पुनर्नवा) इन दस औषधियों का प्रयोग भी १२ वें प्रयोग के समान करना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाहिए इनका स्वरस न मिलने पर यह विधि है कि सूखे पदार्थ को आठगुने जल में पकाना चाहिए चौथाई शेष रहने पर छान-कर प्रयोग करना चाहिये। भोजन विधि १२ वें प्रयोग के समान तथा गुण भी १२ वें प्रयोग के समान समझने चाहिए।

चतुर्दश-प्रयोग

भल्लातकान्यनुपहतान्यनामयान्यापूर्णरसप्रमाणवीर्याणि पक्व जांबव-प्रकाशानि शुचौ शुक्रे वा मासे संगृह्य यवपल्ले माषपल्ले वा निधापयेत्, तानि चतुर्मासस्थितानि सहे सहस्ये वामासे प्रयोक्तुमारभेत शीत स्निग्ध-मधुरोपस्कृत शरीरः पूर्वं दश भल्लातकान्यापोथ्याष्टगुणेनाम्भसा साधु साधयेत्, तेषां रसमष्टभागावशिष्टं पूतं सपयस्कं पिबेत् सर्पिषान्तमुंख मभ्यज्य। तान्येकैकभल्लातकोत्कर्षापकर्षेणदशभल्लातकान्यात्रिशंतः प्रयो-ज्यानि नातः परमुत्कर्षः प्रयोगविधानेन सहस्रपरो भल्लातक प्रयोगः जीर्णे सर्पिषा पयसा शालिषष्टिकासनमुपचारः प्रयोगान्ते च द्विस्तावत् पयसैवोपचारः, तत्प्रयोगाद्वर्षशतमजरं वयस्तिष्ठतीति समानं पूर्वेण।

जिन पर किसी प्रकार की चोट न लगी हो, जिनमें किसी प्रकार का रोग (कीड़े आदि) न हों, जो रस और वीर्य से पूर्ण हों तथा जो पके हुए जामुन के समान काले रंग के हों, ऐसे भिलावों को जेठ और आषाढ़ मास में एकत्रित करके जौ से भरे कोठे में या उड़द के ढेर में एक बर्तन में भर कर रख देवे। चार मास बाद अगहन या पौष मास में इनका सेवन प्रारम्भ करे—खाने से पूर्व अपने शरीर को शीतल, मधुर तथा स्निग्ध पदार्थों से संस्कृत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कर लेवे। इनके सेवन करने का प्रकार यह है कि पहले दस भिलावों को कुचलकर आठ गुने पानी में पकावे, जब आठवाँ भाग रस रह जावे तब इसको छानकर इसमें दूध मिलाकर पीवे और पीने से पहले मुख में घी का लेप लगा लेवे, जिससे मुख के भीतर की सारी त्वचा चिकनी हो जाय। इस प्रकार से प्रतिदिन एक भिलावे को बढ़ाते हुए, तीस भिलावे तक बढ़ावे। तीस से ऊपर भिलावें की मात्रा नहीं बढ़ावे और फिर उसी प्रकार से घटाकर दस तक ले आवे। इस प्रकार एक हजार भिलावों का प्रयोग करे। भिलावों के जीर्ण होने पर घी और दूध के साथ शालि या साठी के चावल खावे। प्रयोग के बाद (जितने दिन भिलावों का प्रयोग किया हो उससे दुगुने दिनों तक) दूध का ही उपयोग करे अर्थात् दोनों समय दूध ही पीवे। इस प्रकार करने से एक सौ वर्षों की बिना वृद्धावस्था के आयु होती है। अन्य गुण सातवें प्रयोग के समान जानने चाहिए।

पञ्चदश प्रयोग—

भल्लातकानांजर्जरीकृतानां पिष्टस्वेदनं पूरयित्वा भूमावाकण्ठम् निखातस्य स्नेहभावितस्य दृढस्योपरि कुम्भस्यारोप्योडुपेनापिधाय कृष्णा-मृत्तिकावलिप्तं गोमयाग्निभिरुपस्वेदयेत्तेषां यः स्वरसः कुम्भं प्रपद्येत, तमष्टभागमधुसम्प्रयुक्तम् द्विगुणघृतमद्यात्, तत्प्रयोगाद्वर्षशतमजरं वयस्तिष्ठतीति समानं पूर्वेण।

भिलावों को कुचलकर पिष्ट स्वेद विधि से (पेंदो में छिद्र किये हुए) घड़े में रखे। एक दूसरे घड़े में घी का लेप करके इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

घड़े को गले तक मिट्टी में गाड़ दे। इस घड़े के मुख पर भिलावे-वाला घड़ा रखकर इसका मुख ढक्कन से बन्द कर दे। इनकी सन्धियों को काली मिट्टी से बन्द करदे। अब ऊपर के घड़े के चारों ओर कण्डे चिनकर आग लगावे। आग की आँच से तैल निचले घड़े में आयेगा। इस तैल में आठवाँ भाग शहत और दुगुना घी मिलाकर खावे (मात्रा आधी बूँद से दो बूँद तक) इसके प्रयोग से एक सौ वर्ष की बुढ़ापे से रहित आयु होती है। अन्य गुण सातवें प्रयोग के समान जानने चाहिएँ।

षष्ठदश प्रयोग—

भल्लातक तैल पात्रम् सपयस्कं मधुकेन कल्के नाक्षमात्रेण शतपाकं कुर्यात् समानं पूर्वेण।

१५ वें प्रयोग के अनुसार बनाये गये भिलावें के १६ सेर तेल को ६४ सेर दूध, मुलहटी का कल्क २ तोला इनसे पाक करे। इस पकार १०० बार पाक करके तैल सिद्ध करे। इसका सेवन भी १५ वें प्रयोग के समान करना चाहिए और गुण भी ७ वें प्रयोग के समान जानने चाहिएँ।

सप्तदश प्रयोग—

करप्रचितानां यथोक्तगुणानामामलकानामुद्धृतास्थ्नां शुष्क चूर्णितानां पुनः माघे फाल्गुने वा मासे त्रिःसप्तकृत्वः स्वरसपरिपीतानांपुनः शुष्क चूर्णीकृतानामामलकमेकं ग्राहयेत् अथ जीवनीयानां बृंहणीयानां स्तन्यजननानां वयःस्थापनानां षड्विरेचनशताश्रितीयोक्ताना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मौषधगणानां चन्दनागुरु धवतिनिश खदिर शिंशपासन साराणां चाणुशः छिन्नानामभया बिभीतक पिप्पली बचा चव्य चित्रक विडङ्गानां समस्ताऽनामामलकमेकं दशगुणानाम्भसा साधयेत्, तस्मिन्नामलका वशेषे रसे सुपूते तान्यामलक चूर्णानि दत्त्वा गोमयाग्निभिर्वंशं विदल-शरतेजनाग्निभिर्वा साधयेद्यावदपनयाद्रसस्य, तमनुपदग्धमुपहृत्यायसीषु पात्रीष्वास्तीर्य शोषयेत्, सुशुष्कं कृष्णाजिनस्योपरितःदृषदि श्लक्ष्ण पिष्टमयः स्थाल्यां निधापयेत्, सम्यक् तच्चूर्णमयश्चूर्णाष्ट भाग सम्प्र-युक्तं मधुसर्पिर्भ्यामग्नि बलमभिसमीक्ष्य प्रयोजयेदिति ।

एतद्रसायनं पूर्वं वसिष्ठः कश्यपोऽङ्गिराः ।
जमदग्निर्भरद्वाजो भृगुरन्ये च तद्विधाः ॥
प्रयुज्य प्रयता मुक्ताः श्रम व्याधि जरा भयात् ।
यावदैच्छंस्तपस्तेपुस्तत्प्रभावान्महाबलाः ॥

माघ या फाल्गुन मास में कृमि आदि से रहित तथा पके हुए आँवलों को वृक्ष पर से हाथों द्वारा तोड़कर एकत्र करे (भूमि पर गिरे आँवलों को ग्रहण नहीं करे)। इनकी गुठली निकाल-कर छाया में शुष्क करे। इनको २१ बार आँवलों के स्वरस की भावना देवे। इस चूर्ण को ८ सेर लेवे और चरक के "षड् विरेचन शताश्रितीय" नामक अध्याय में वर्णित जीवनीय, बृंहणीय स्तन्यजनक, वयःस्थापक औषधि समूह और चन्दन, अगरु, धव, तिनिश (आबनूस) खैर, शीशम और असन इन वृक्षों के बीच के काष्ठ को टुकड़े-टुकड़े करके तथा हरड़, बहेड़ा, पिप्पली बचा, चव्य, चित्रक, वायविडंग इन सब को ८ सेर लेकर ८०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सेर पानी में पकावे और जब काढ़ा ८ सेर रह जावे तब भली प्रकार छानकर आँवले का चूर्ण मिला दे। कंडों, बाँस की खपच्ची सरकंडे तथा तेजबल की लकड़ियों से तेज करके इसको पकाया जावे। जब रस शुष्क हो जावे (परन्तु चूर्ण जले नहीं) तब उतार लेवे। बिना जले हुए अवलेह को उतार कर लोहे की थालियों में फैलाकर शुष्क करे। शुष्क हो जाने पर काले हिरन की खाल पर रक्खी शिला पर खूब बारीक पीसकर लोहे की थाली में रख दे। इस चूर्ण में लोह भस्म आठवाँ भाग मिलाकर घृत मधु के साथ अग्नि बल को देखकर सेवन करे। पहले वशिष्ठ कश्यप, अंगिरा, जमदग्नि भरद्वाज, भृगु तथा अन्य इसी प्रकार के ऋषियों ने इसका प्रयोग किया था, इसके प्रयोग करने पर वे श्रम-रोग और बुढ़ापे से मुक्त हो गये थे। इसके प्रभाव से उन्होंने यथेच्छ तप किया था।

अष्टादश प्रयोग—

संवत्सरं पयो वृत्तिर्गवां मध्ये वसेत् सदा।
सावित्रीं मनसा ध्यायन् ब्रह्मचारी यतेन्द्रियः॥
संवत्सरान्ते पौषीं वा माघीं वा फाल्गुनीं तिथिम्।
त्र्यहोपवासी शुक्लश्च प्रविश्यामलकी वनम्॥
बृहत्फलाढ्यमारुह्य द्रुमं शाखागतम् फलम्।
गृहीत्वा पाणिना तिष्ठेज्जपन् ब्रह्मामृतागमात्॥
तदाह्ययश्यमसृतं वसत्यामलके क्षणम्।
शर्करामधुकल्पानि स्नेहवन्ति मृदूनि च॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भवन्त्यमृत संयोगात्तानि यावन्ति भक्षयेत् ।
जीवेद्वर्ष सहस्राणि तावन्त्यागत यौवनः ॥
सौहित्यमेषां गत्वा तु भवत्यमर सन्निभः ।
स्वयं चास्योपतिष्ठन्ते श्रीर्वेदा वाक् च रूपिणी ॥

एक वर्ष पर्यन्त केवल दूध पर रहकर सदा गायों के बीच में निवास करे, वहाँ पर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए गायत्री का ध्यान करे। एक वर्ष के उपरान्त, माघ, पूष, या फाल्गुन मास की किसी भी पुण्य तिथि में आँवले के जंगल में पहुँचे। वहाँ पर जाने से पूर्व तीन दिन उपवास करे फिर शुद्ध होकर वन में घुसे। वहाँ पर किसी भी आँवलों से युक्त वृक्ष पर चढ़कर हाथ से फल को पकड़कर अमृत के आने तक ब्रह्म "ओंकार" का जप करता रहे। इस प्रकार जप करने से क्षण भरके लिये आँवले में अमृतत्व आ जाता है। अमृत के आने से आँवले, शकर और शहद के समान मीठे, स्नेहवाले तथा कोमल हो जाते हैं इनको खावे। वह जितने भी आँवले खायेगा उतने ही हजार वर्षों तक युवा रहकर जीवित रहेगा। यदि भरपेट तृप्त होकर खावे तो अमर हो जावे, तथा बहुत दीर्घायु हो। लक्ष्मी, वेदवाणी, सरस्वती और कान्ति स्वयं उसके सामने उपस्थित होती है।

एकोनविंशतिः प्रयोग

त्रिफलाया रसे मूत्रे गवां क्षारे च लावणे ।
क्रमेण चैंगुदीक्षारे किंशुकक्षार एव च ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तीक्ष्णायसस्य पत्राणि वह्नि वर्णानि वापयेत्।
चतुरंगुलदीर्घाणि तिलोत्सेधसमानि च ॥
ज्ञात्वातान्यञ्जनाभानि सूक्ष्म चूर्णानि कारयेत्।
तानि चूर्णानि मधुना रसेनामलकस्य च ॥
युक्तानि लेहवत् कुम्भे स्थितानि घृतभाविते।
संवत्सरं निधेयानि यवपल्ले तथैव च ॥
दद्यादालोडनं मासे सर्वत्रालोडयन् बुधः।
संवत्सरात्यये तस्य प्रयोगो मधु सर्पिषा ॥
प्रातः प्रातर्बलापेक्षी सात्म्यं जीर्णे च भोजनम्।
एष एव च लोहानां प्रयोगः सम्प्रकीर्तितः ॥
अनेनैव विधानेन हेम्नश्च रजतस्यच।
आयुः प्रकर्षकृत्सिद्धः प्रयोगः सर्वरोगनुत् ॥
नाभिघातैर्नचातङ्कैर्जरया न च मृत्युना।
सधृष्यः स्यात् गजप्राणः सदाचातिबलेन्द्रियः ॥
धीमान् यशस्वी वाक्सिद्धः श्रुतधारी महाधनः।
भवेत्समां प्रयुञ्जानो नरो लौह रसायनम् ॥

फौलाद के चार अंगुल लम्बे और तिल भर मोटे पत्रों को आग में लाल करके क्रमशः त्रिफला के काढ़े में, गोमूत्र में, मालकंगनी के क्षारोदक में तथा इंगुदी (हिंगोट) के क्षार में और ढाक के क्षारोदक में बुझा ले। बुझाने से पूर्व फिर-फिर तपाकर लाल कर लिया करे। बुझाने पर जब पत्र अंजन के समान काले और टूटनेवाले हो जावें तब इनका बारीक चूर्ण बना लेवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस चूर्ण को शहद तथा आँवले के रस में मिलाकर अवलेह की भाँति कर लेवे। इस अवलेह को घृत से भावित घड़े में रखकर एक वर्ष पर्यन्त जौ के ढेर में दबा दे। प्रत्येक मास लकड़ी के डण्डे से इसको चला देवे। एक साल के बाद इसको घी और शहद के साथ प्रत्येक दिन प्रातःकाल अग्नि बल के अनुसार प्रयोग करे। जीर्ण होने पर प्रकृति के अनुसार भोजन करे। इसी प्रकार अन्य धातुओं का भी प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार सोने और चाँदी का प्रयोग दीर्घायु करता है और सम्पूर्ण रोगों को नष्ट करता है। इस लौह रसायन का एक वर्ष तक प्रयोग करने पर मनुष्य आघात (चोट) रोग, बुढ़ापा तथा मौत से बचा रहता है हाथी के समान शक्तिशाली हो जाता है, इन्द्रियाँ अति बलवान हो जाती हैं। मेधावी, यशस्वी, वाक्सिद्ध (जो कहेगा सो होगा) श्रुतधारी (सुनते ही धारण करनेवाला) महाधनशाली हो जाता है।

विशंतिः प्रयोग—

ऐन्द्री मत्स्याक्षको ब्राह्मी तथा ब्रह्मसुवर्चला।
पिप्पल्यो लवणं हेम शङ्खपुष्पी त्रिषम्घृतम् ॥
एषां त्रियवकान् भागान् हेम सर्पिर्विषैर्विना।
द्वौयवौ तत्र हेम्नस्तु तिलंदद्याद्विषस्य च ॥
सर्पिषश्चपलंदद्यात्तदैकध्यं प्रयोजयेत्।
घृतप्रभूतंसक्षौद्रं जीर्णे चान्नंप्रशस्यते ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जरा व्याधि प्रशमनं स्मृतिमेधाकरं परम् ।
आयुष्यं पौष्टिकं बल्यं स्वर वर्ण प्रसादनम् ॥
परमोजस्करं चैतत्सिद्धमेतद्रसायनम् ।
नैनं प्रसहते कृत्या नालक्ष्मीर्नविषं नरुक् ॥
श्वित्रं सकुष्ठं जठराणि गुल्माःप्लीहा पुराणो विषम ज्वरश्च ।
मेधा स्मृति ज्ञान हराश्च रोगाः शाम्यन्त्यनेनाति बलाश्च वाताः ॥

ऐन्द्री (इन्द्र वारुणी) मत्स्याक्षक (मछेछी) ब्राह्मी, वचा, ब्रह्मसुवर्चला (मण्डूकपर्णी या सूरजमुखी) पिप्पली, सेंधा नमक, स्वर्ण, शंखाहुली, विष घी इनमें स्वर्ण, विष तथा घी को छोड़कर प्रत्येक औषध को तीन जौ भर लेवे। स्वर्ण को दो जौ (यव) के समान विष (वत्सनाभ) एक तिल भर और घी एक पल मिलाना चाहिये। इसका सेवन करके घी, तथा शहत से मिला हुआ आहार दवा के जीर्ण होने पर पर्याप्त मात्रा में खाना चाहिये। इसके खाने से बुढ़ापा शान्त होता है। स्मृति और मेधा बढ़ती है। आयुवर्द्धक, पौष्टिक, बलकारक, स्वर और वर्ण को शुद्ध करता है। यह सिद्ध रसायन अत्यन्त कान्ति को बढ़ानेवाली है। इसके प्रयोग से कृत्या (बुराई या आभिचारिक प्रयोग) दरिद्रता, विष और रोग भी प्रभाव नहीं करते। श्वित्र, कुष्ठ, उदररोग, गुल्म, प्लीहा, पुराना विषम ज्वर, मेधा, स्मृति और ज्ञान को नष्ट करनेवाले रोग तथा अत्यन्त बलवान वायुरोग भी इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एक विंशतिः प्रयोग—

मण्डूकपर्ण्याः स्वरसःप्रयोज्यः क्षीरेण यष्टी मधुकस्य चूर्णम् ।
रसो गुडूच्या स्तुसमूलपुष्प्याः कल्कः प्रयोज्यः खलु शंखपुष्प्याः ॥
आयुः प्रदान्यामयनाशनानि बलाग्नि वर्णास्वरवर्धनानि ।
मेध्यानि चैतानि रसायनानि मेध्या विशेषेण च शंखपुष्पी ॥

(१) मण्डूक पर्णीका स्वरस प्रयोग करना चाहिये (२) मुलहटी का चूर्ण गाय के दूध के साथ सेवन करना चाहिये (३) गिलोय के रस का प्रयोग करना चाहिये (४) शंखाहुली को उसके फूल तथा जड़ के साथ प्रयोग में लाना चाहिये। ये चारों रसायन आयुवर्धक, रोग नाशक, अग्नि, बल, वर्ण तथा स्वर की वृद्धि करते हैं। ये रसायन मेधावर्धक भी हैं शंखपुष्पी विशेष रूप से बुद्धि वर्धक है।

द्वाविंशतिः प्रयोग—

पञ्चषट् सप्तदश वा पिप्पलीमधुसर्पिषा ।
रसायन गुणान्वेषी समामेकां प्रयोजयेत् ॥
तिस्रस्तिस्रस्तु पूर्वाह्णे भुक्त्वाग्रे भोजनस्य च ।
पिप्पल्यःकिंशुकक्षार भाविता घृतभर्जिता ॥
प्रयोज्या मधुसर्पिभ्यां रसायन गुणैषिणा ।
जेतुं कासं क्षयं शोषं श्वासं हिक्कां गलामयान् ॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषं पाण्डुतां विषमज्वरम् ।
वैस्वर्यं पीनसं शोफं गुल्मं वातबलासकम ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रसायन के गुणों को व्यवहार करनेवाले पुरुष को चाहिये कि पाँच-छः, सात या दस पिप्पली को (इनका चूर्ण, कल्क या फाण्ट बनाकर) मधु और घी के साथ एक साल तक खावे। पिप्पली को ढाक के क्षारोदक से भावना देकर गाय के घृत में भून लेवे। इनमें से तीन-तीन पिप्पली को घी में मिलाकर प्रातःकाल, भोजन से पूर्व तथा भोजन के बाद तीन समय खाना चाहिये। इस प्रकार करने से, कास, क्षय, श्वास-शोष, हिचकी, गले की बीमारियाँ, बवासीर, संग्रहणी, पीलिया, विषमज्वर, स्वरभंग, पीनस, शोफ, गुल्म तथा वायु और कफ के रोग दूर होते हैं। (ढाक के क्षारोदक की कम-से-कम सात भावनायें देनी चाहिये)।

त्रयोविंशतिः प्रयोग--

क्रम वृद्ध्या दशाहानि दश पैप्पलिकं दिनम्।
वर्धयेत् पयसा सार्धं तथा चापनयेत् पुनः॥
जीर्णेऽन्नान्ते च भुञ्जीत षष्टिकं क्षीरसर्पिषा।
पिप्पलीनां सहस्रस्य प्रयोकोऽयं रसायनम्॥
पिष्टास्ताः बलिभिः सेव्या श्रृता मध्य बलैर्नरैः।
शीतीकृता ह्रस्व बलैर्योज्या दोषामयान् प्रति॥
दश पैप्पलिकः श्रेष्ठो मध्यमः षट्प्रकीर्तितः।
प्रयोगोयं त्रिपर्यन्तः सकनीयान् सचाबलैः॥
बृंहणं स्वर्य मायुष्यं प्लीहोदर विनाशनम्।
वयसः स्थापनं मेध्यं पिप्पलीनां रसायनम्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रथम दिन दस पिप्पलियों का दूध के साथ सेवन करे। दूसरे दिन बीस का और तीसरे दिन तीस का। इस प्रकार से प्रत्येक दिन १० दिनों तक १०-१० पिप्पलियाँ बढ़ाता जावे। साथ में दूध की मात्रा भी बढ़ाता जावे (दूध की मात्रा ८ तोले से प्रारम्भ करे और प्रत्येक दिन जैसे-जैसे पिप्पली बढ़ावे वैसे-वैसे प्रत्येक दिन दूध भी ८-८ तोले बढ़ाता जावे, फिर पिप्पलियों के घटाने पर दूध की मात्रा भी घटाता जावे) दस दिन के बाद ११ हवें दिन से प्रत्येक दिन १० पीपल कम करे, इस प्रकार २० वें दिन दस पर ही आ जावे। पिप्पली के जीर्ण होने पर साठी का भात दूध और घी के साथ खाना चाहिए। दोष और रोगों को देखकर बलशाली पुरुष पीसकर, मध्यम बलवाला पुरुष काढ़ा बनाकर तथा दुर्बल मनुष्य उबालकर ठण्डा करके उपयोग करे। १० पिप्पली का प्रयोग उत्तम छः पिप्पली का मध्यम और तीन पिप्पली का निकृष्ट कहा जाता है। पिप्पली रसायन पुष्टि-दायक, स्वर वर्द्धक, आयुप्रद, प्लीहा, उदर रोग का नाशक, आयु को स्थिर रखनेवाली और बुद्धिवर्धक है।

चतुर्विंशतिः प्रयोग—

जरणान्तेऽभया मेकां प्राग्भुक्ते द्वेविभीतके।
भुक्त्वा तु मधु सर्पिभ्याञ्चत्वार्यामलकानि च॥
प्रयोजयेत्समामेकां त्रिफलाया रसायनम्।
जीवेद्वर्षं शतं पूर्णमजरोऽव्याधिरेव च॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रात्रि के भोजन के जीर्ण हो जाने पर प्रातःकाल एक बड़ी हरड़ तथा भोजन से पूर्व दो बहेड़े और भोजन के बाद चार आँवले घी और शहद के साथ खावे (इन चीजों को कूटकर तथा छानकर घी और शहद साथ खाना चाहिए)। इस रसायन का एक वर्ष तक प्रयोग करने से १०० वर्ष तक वृद्धावस्था और रोगों से मुक्त होकर जीवित रहता है।

पंच विंशतिः प्रयोग—

त्रैफलेनायसीं पात्रीम् कल्केनालेपयेन्नवाम्।
तमहोरात्रिकं लेपं पिबेत्क्षौद्रोदकाप्लुतम्॥
प्रभूतस्नेहमशनं जीर्णे तत्र प्रशस्यते।
अजरोऽरुक् समाभ्यासाज्जीवेच्चैव समाःशतम्॥

लोहे के नवीन पात्र में त्रिफला को पीसकर लेप देवे और २४ घंटे तक इसको लगा रहने दे फिर शहद को पानी में घोल-कर उसमें इसको मिलाकर पीना चाहिए। इसके जीर्ण होने पर खूब स्नेह (घी) पीना चाहिए। इसके एक वर्ष तक प्रयोग करने पर जरा और रोगों से मुक्त होकर १०० वर्ष तक जीता है।

सप्त विंशतिः प्रयोग—

मधुकेन तुगाक्षीर्या पिप्पल्या क्षौद्र सर्पिषा।
त्रिफलासित या चापि युक्ता सिद्धं रसायनम्॥

त्रिफला के साथ, वंशलोचन, मुलहटी, पीपल, घी, मधु और शक्कर इन सब को एकत्र कर सेवन करे यह सिद्ध रसायन है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अष्टाविंशति प्रयोग—

सर्वं लोहैः सुवर्णेन वचया मधुसर्पिषा ।
विडंग पिप्पलीभ्यां च त्रिफला लवणेन च ॥
सम्वत्सर प्रयोगेण मेधास्मृति बलप्रदा ।
भवत्यायुष्प्रदा धन्या जरा रोग निवर्हिणी ॥

त्रिफला को सब धातुओं की भस्म (सोना, चाँदी, राँगा, ताँबा, सीसा, लोहा तथा जस्ता) स्वर्ण (पुनः एक भाग और) वच, घी, शहत, वायविडंग, पिप्पली और सैंधा नमक के साथ प्रयोग करे । इसके एक वर्ष तक प्रयोग पर मेधा, स्मृति, वल, आयु बढ़ती है । यह रसायन धन्य है तथा बुढ़ापे और रोगों को दूर करती है ।

एकोनविंशति प्रयोग—

पूर्वोक्तेन विधानेन लोहैश्चूर्णीकृतैः सह ।
तत्पीतं पयसादद्यात् दीर्घमायुः सुखान्वितम् ॥
जरा व्याधि प्रशमनं देहदार्ढ्यकरं परम् ।
मेधास्मृतिकरं बल्यं क्षीराशी तत्प्रयोजयेत् ॥
प्रयोगः सप्त सप्ताहास्त्रयश्चैकश्च सप्तकः ।
निर्दिष्टस्त्रिविधस्तस्य परोमध्योऽवरस्तथा ।
पलमर्धंपलं कर्षो मात्रा तस्य त्रिधा मता ॥

लौह आदि धातुओं के योग से बने और काथ्य द्रव्यों के योग से शुद्ध शिलाजीत को लेकर दूध के साथ पीने से आरोग्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

युक्त दीर्घ अवस्था प्राप्त होती है। लोह आदि जितने धातु आवश्यक हों उन सबों को मिलाकर या अलग-अलग शिलाजीत के साथ उपयोग करे। शिलाजीत के प्रयोग करने के समय केवल दूध का ही सेवन करना चाहिए। इसके सेवन से बुढ़ापा और रोग मिटते हैं, शरीर अतिशय दृढ़ होता है, मेधा और स्मृति बढ़ती है और बल भी बढ़ता है। शिलाजीत का ७ सप्ताह सेवन, पर (सर्वोत्तम) कहलाता है, तीन सप्ताह का मध्यम और एक सप्ताह का अवर (निकृष्ट) कहलाता है। इसकी उत्तम मात्रा ८ तोले की, मध्यम ४ तोले की और निकृष्ट दो तोले की होती है। आज कल मात्रा २ रत्ती से ८ रत्ती तक ही पर्याप्त होगी; लेकिन सेवन समय बढ़ा देना होगा।

त्रिशंत् प्रयोग—

ऐन्द्री ब्राह्मी पयस्या क्षीरपुष्पी श्रावणी महाश्रावणी शतावरी विदारी जीवन्ती पुनर्नवा नागबला स्थिरा वचा छत्राऽतिच्छत्रा मेदा महामेदा जीवनीयाश्चान्याः पयसाप्रयुक्ताः षण्मासाद परमायुर्वयश्च तरुणमनामयत्वं स्वरवर्णं संपदमुपचयं मेधां स्मृतिमुत्तमबल मिष्टांपश्चरान् भावानाह्नन्ति सिद्धाः।

ऐन्द्री (इन्द्रायण) ब्राह्मी, पयस्या (क्षीर विदारी), क्षीरपुष्पी (शंखपुष्पी) श्रावणी (गोरखमुण्डी) महाश्रावणी (स्वर्ण के समान पीले रंग के रस की होती है), शतावरी, विदारीकन्द, जीवन्ती, नागबला, स्थिरा (शालपर्णी) वचा, छत्रा (सौंफ)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अतिछत्रा (सोया) (द्रोणपुष्पीद्वय छत्रा तथा अतिछत्रा को कहते हैं) मेदा, महामेदा, जीवनीय गण की अन्य औषधियों (काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक मुलहटी मुद्गपर्णी, माषपर्णी) को दूध के साथ ६ मास तक कुटी प्रावेशिक विधि के अनुसार सेवन करने से दीर्घ आयु, तरुणवय, नीरोगता, स्वर और वर्ण की शुद्धता, बुद्धि, मेधा, स्मृति उत्तम बल तथा अन्य इच्छित चीजों की प्राप्ति होती है। इन औषधियों की उत्पत्ति स्थान हिमालय भूमि है वहाँ से इन औषधों को प्राप्त करना चाहिये।

एक त्रिंशत् प्रयोग—

ब्रह्म सुवर्चला नामौषधिर्या हिरण्यक्षीरा पुष्कर सदृशपत्रा, आदित्यपर्णी नामौषधिर्या सूर्यकान्तेति विज्ञायते या बलवजसदृशपत्रा, काष्ठगोधानामौषधिर्गोधाकारा, सर्पानामौषधिः सर्पाकारा, सोमो-नामौषधिराजः पञ्चदशपर्णः स सोम इव हीयते वर्धते च, पद्मा नामौषधिः पद्माकारा, पद्मारक्ता पद्मगन्धा च, आजा नामौषधिस्तुनीलक्षीरा नीलपुष्पा लता प्रतान बहुला, इत्यासामष्टानामोषधीनां यां यामेवोपलभेत तस्या स्तस्याः स्वरसस्य सौहित्यंगत्वा स्नेह भावितायामार्द्र पलाश द्रोण्यां सपिधानायां दिग्वासः शयीत, तत्र प्रलीयते षण्मासेन पुनः पुनः संभवति, तस्याजं पयः प्रत्यवस्थापनं, षण्मासेन देवतानुकारी भवति, वयोवर्णं स्वराकृतिबलप्रभाभिः, स्वयं चास्य सर्वं वाचोगतानि प्रादुर्भवन्ति, दिव्यं चास्य चक्षुः श्रोत्रं भवति, गतियोंजन सहस्रं, दश वर्ष सहस्राण्यायुरनुपद्रवं चेति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ब्रह्म सुवर्चला नाम की जो औषधि है उसका दूध स्वर्ण के समान पीला और पत्ते कमल के समान होते हैं। आदित्यपर्णी नाम की जो औषधि सूर्यकान्ता नाम से प्रसिद्ध है, इसका रस पीला होता है और इसका फूल सूर्य के मण्डल के समान होता है। सर्पा नाम की औषधि सर्प के आकार की होती है। सोम नामक औषधि सब औषधियों का राजा है। इसके १५ पत्ते होते हैं यह औषधि चन्द्रमा के साथ-साथ शुक्ल पक्ष में बढ़ती है और कृष्ण पक्ष में प्रतिदिन एक-एक पत्ते का नाश होता जाता है। पद्मा नाम की औषधि कमल के आकार की, रक्त कमल के समान लाल रंग की और कमल के ही समान सुगन्धवाली है। अजा नाम की औषधि को 'अजशृंगी' कहते हैं। नीला नाम की औषधि का दूध नीला फूल भी नीले तथा इसका विस्तार बहुत होता है। इन आठ औषधियों में (सोम सहित ६) जो-जो भी मिल सके उसका रस पेट भर पी लेवे। फिर घी, तेल, आदि चिकने पदार्थों से भावित ताजे (गीले) ढाक की लकड़ी से बनी, ढक्कन से युक्त द्रोणी (नाँद) में नंगा होकर लेट जाना चाहिये, वहाँ पर वह ६ मास तक अचेत सा पड़ा रहता है (६ मास के बाद भोजन आदि करने से चेतनता आती है) इस समय बकरी के दूध से इसे स्वस्थ रखना चाहिये। ६ मास के उपरान्त वह अवस्था, रंग, स्वर, शकल, ताकत, और कान्ति में देवताओं के समान हो जाता है। सब विद्यायें स्वयं उपस्थित हो जाती हैं (सबको सरलता से समझने में समर्थ होता है)। कान और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आँखें दिव्य हो जाती हैं, एक हज़ार योजन (४ कोस का एक योजन) तक बिना थके चल सकता है (अर्थवाद है, तात्पर्य यह है कि बहुत दूर चलने पर भी थकावट नहीं आती) बिना रोग आदि उपद्रवों के एक हज़ार वर्ष की आयु भोगता है। (नाँद में लेट जाने पर नाँद के ढक्कन में एक छेद कर दे और एक नाली लगाकर उसीसे उसके मुख में दूध देवे, श्वास आदि के लिये ढक्कन में और भी छेद करे)। जो मनुष्य इन दवाओं को प्राप्त न कर सकें वे अगला ३२वाँ प्रयोग करें।

द्वात्रिंशत् प्रयोग—

बल्यानां जीवनीयानां बृंहणीयाश्च या दश।
वयसः स्थापनानां च खदिरस्यासनस्य च॥
खर्जूराणां मधूकानां मुस्तानामुत्पलस्य च।
मृद्वीकानां विडङ्गानां वचायाश्चित्रकस्य च॥
शतावर्याः पयस्यायाः पिप्पल्या जोङ्गकस्य च।
ऋद्ध्या नाग बलायाश्च हरिद्राया धवस्य च॥
त्रिफला कण्टकार्योश्च विदार्याश्चचन्दनस्य च।
इक्षूणां शरमूलानां श्रीपर्ण्याश्शितनिशस्य च॥
रसाः पृथक् प्रथग्ग्राह्या पलाशक्षार एवच॥
एषां पलोन्मितान् भागान् पयोगव्यं चतुर्गुणम्॥
द्वे पात्रे तिल तैलस्य द्वे च गव्यस्य सर्पिषः।
तत्साध्यं सर्वमेकत्र सुसिद्धं स्नेहमुद्धरेत्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तत्रामलकचूर्णानामाढकं शतभावितम् ।
स्वरसेनैव दातव्यं क्षौद्रस्याभिनवस्य च ॥
शर्कराचूर्ण पात्रं च प्रस्थमेकं प्रदापयेत् ।
तुगाक्षीर्या: सपिप्पल्याः स्थाप्यं संमूर्च्छितम् च तत् ॥
सुचौक्षे मार्तिके कुम्भे मासार्धं घृत भाविते ।
मात्रामग्नि समां तस्य तत अर्द्धं-प्रयोजयेत् ॥
हेम ताम्र प्रवालानामयसः स्फटिकस्य च ।
मुक्ता वैदूर्य शङ्खानां चूर्णानां रजतस्य च ॥
प्रक्षिप्य षोडषीं मात्रां विहायायास मैथुनम् ।
जीर्णे जीर्णे च भुञ्जीत षष्टिकं क्षीर सर्पिषा ॥
सर्वरोग शमनं वृष्यमायुष्यमुत्तमम् ।
सत्त्वस्मृति शरीराग्नि बुद्धीन्द्रिय बलप्रदम् ॥
परमूर्जस्करं चैव वर्णस्वरकरं तथा ।
विषालक्ष्मी प्रशमनं सर्वं वाचो गत प्रदम् ॥
सिद्धार्थतां चाभिनवं वयश्च प्रजाप्रियत्वं च यशश्चलोके ।
प्रयोज्यमिच्छद्भिरिदं यथावद्रसायनं ब्राह्ममुदारवीर्यम् ॥

चरक के सूत्र स्थान में वर्णित बल्य, जीवनीय, बृहंणीय और वयः स्थापक गण की दस औषधियाँ, खैर, असन, खजूर, महुआ, सोथा, नील कमल, कालीद्राक्षा, वायविडंग, चीता, वच, शतावरी, पयस्या (क्षीर विदारी) पिप्पली, जोङ्गक (अगरु) ऋद्धि, नागबला (सागोन, हल्दी) धव, त्रिफला, कण्टकारी, लाल चन्दन, गन्ने की जड़, सरकण्डे की जड़, श्रीपर्णी (गम्भारी)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तिनिश (आबनूस, रथद्रुम) इनका पृथक्-पृथक् रस ६४ सेर पलाश का क्षार ८ तोले गाय का दूध ५२६ सेर. तिल का तेल ३२ सेर गाय का घी ३२ सेर इनका यथा विधि पाक करके छान लेना चाहिए। इस छने हुए स्नेह में आँवलों का चूर्ण ८ सेर मिला देना चाहिए। फिर ताजा शहद १६ सेर शक्कर ८ सेर, बंशलोचन और पिप्पली प्रत्येक ६४ तोले मिलाकर चलाना चाहिए। फिर घी से भावित मिट्टी के पात्र में १५ दिन तक रखना चाहिए। पीछे से सोना, ताम्बा, मूंगा, लौह, स्फटिक (बिल्लौर) मोती, वैडूर्य (लहसुनिया) शंख और चाँदी इनकी भस्मों का एक का सोलहवाँ भाग मिलाना चाहिए। इसके बाद अग्नि और बल के अनुसार इसका सेवन करना चाहिए (आमलकादि चूर्ण युक्त घृत की अपेक्षा से एक का सोलहवाँ भाग लेना चाहिए) इसका सेवन करते समय परिश्रम और मैथुन का त्याग करना चाहिए। औषधि के पच जाने पर साठी के चावलों को दूध और घी के साथ खाना चाहिए।

यह रसायन सब रोगों को नाश करता है। वीर्य-वर्धक, आयु-वर्द्धक तथा श्रेष्ठ है। सत्व, स्मृति, कायाग्नि, बुद्धि और इन्द्रियों के बल को बढ़ाता है। विष तथा दरिद्रता को दूर करता है। सब वाणियों का ज्ञाता करनेवाला होता है। इच्छा सिद्धि, नवीन वय जनता में सत्कार और संसार में यश चाहनेवाले को इस ब्राह्म तथा उदार वीर्य रसायन का विधिपूर्वक सेवन करना चाहिए।

सुश्रुत संहिता के अन्दर भी कायाकल्प रसायनों का कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वर्णन आया है, इनमें कुछ प्रयोग तो चरक संहिता के अनुसार ही हैं; परन्तु कुछ प्रयोगों में विशेषता है। अतः उन्हीं का वर्णन यहाँ पर किया जाता है।

त्रयस्त्रिंशत् प्रयोग—

तत्रविडङ्ग तण्डुल चूर्ण माहृत्य यष्टीमधुयुचं यथाबलं शीत तोये-न उपयुञ्जीत शीततोयं चानुपिबेदेवमहरहर्मासं तदेव मधुयुक्तं भल्लात-कक्काथेन वा मधुद्राक्षा क्काथ युक्तं वा मध्वामलक रसाभ्यां वा गुडूची क्काथेन वा। एवमेते पञ्चप्रयोगाः भवन्ति। जीर्णे मुद्गामलक यूषेणा लवणेनाल्पस्नेहेन घृतयन्तमोदनमश्नीयात् एतेखल्वर्शांसि नुपयन्ति कृमीनुपघ्नन्ति ग्रहणाधारणा शक्ति जनयन्ति। मासे-मासे प्रयोगे वर्षं शत-मायुषोऽभिवृद्धिर्भवति।

छिलकों से रहित विडंग के चूर्ण को लेकर उसमें मुलहटी मिलादेवे और अपनी शक्ति के अनुसार ठण्डे पानी से खावे और ठण्डा ही पानी बाद में भी पिये। इस प्रकार एक मास तक प्रत्येक दिन सेवन करे अथवा (२) उस विडंग के चूर्ण को शहद मिला-कर भिलावे के काढ़े के साथ सेवन करे। (३) अथवा उस चूर्ण में शहद तथा मुनक्के के काढ़े को मिलाकर शहद के साथ सेवन करे। (४) अथवा आंवले के स्वरस के साथ सेवन करे। (५) अथवा गिलोय के काढ़े के साथ सेवन करे। इस प्रकार से यह एक ही चीज के पाँच प्रयोग हैं। दवा के पच जाने पर नमक रहित और थोड़ा सा घी डालकर मूंग के जूस (रस-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

यूष) के साथ और आंवले के यूष के साथ चावलों में खूब मिलाकर खावे (घी की अल्पमात्रा मूँग के यूष को बनाने के लिये है)। इनके सेवन से बवासीर तथा कृमि रोग नष्ट होते हैं, समझने और याद रखने की शक्ति को उत्पन्न करते हैं। प्रत्येक मास में सेवन करने से १०० वर्ष की आयु की वृद्धि होती है।

चतुस्त्रिंशत् प्रयोग—

विडङ्गतण्डुलानां द्रोणं पिष्टपचने पिष्टवदुत्स्वेद्य विगत कषायं स्विन्नमवतार्य दृषदि पिष्टमायसे दृढ़े कुम्भे मधूदकोत्तरं प्रावृषि भस्मराशावन्तर्गृहे चतुरो मासान्निदध्यात् । वर्षापगमे चोद्धृत्यो पसंस्कृतशरीरः सहस्त्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा प्रातः प्रातर्यथा बलमुपयुञ्जीत । जीर्णेमुद्गामलक यूषेणालवणेनाल्पस्नेहेन घृतवन्तमोदन मश्नीयात्। पांशु शय्यायां शयीत। तस्य मासादूर्ध्वं सर्वाङ्गेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति तानणुतैलेनाभ्यक्तस्य यंशविदलेनापहरेत्। द्वितीये पिपीलकास्तृतीयेयूकास्तथैवापहरेत् चतुर्थे नख रोमाण्यवशीर्यन्ते पञ्चमे प्रशस्त गुण लक्षणानि जायन्ते। अमानुषं चादित्य प्रकाशं वपुरधिगच्छति । दूराच्छ्रवणादर्शनानि चास्य भवन्ति । रजस्तमसी चापोह्य सत्वमधितिष्ठति । श्रुतिनिगाद्यपूर्वोत्पादी गजबलोऽश्वयवः पुनर्युवाष्टौ वर्ष शतान्यायुरवाप्नोति । तस्याणुतैल मभ्यङ्गार्थे अजकर्णकषायमुत्सादनार्थे सोशीरंकूपोदकं स्नानार्थे चन्दनमुपलेपनार्थे भल्लातकविधानवदाहारः परिहारश्च । काश्मर्याणां निष्कुलीकृतानामेषएव कल्पः पांशुशय्या भोजन वर्जम् । अत्र हि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पयसाश्तेनभोक्तव्यम् । आशिषश्चपूर्वेण समानाः शोणित पित्त निमित्तेषु विकारेष्वेतेषामुपयोगः ।

विडङ्ग के चावलों को (छिलके निकाले हुए) ३२ सेर लेकर पिष्टपचन विधि से (पोटली में विडङ्ग के चावलों को रखकर दूध एक बर्तन में भरकर उसकी भाफ से इनका स्वेदन करे, पोटली को दूध से स्पर्श न करावे) पिट्ठी की तरह स्वेदन करके कसैलापन दूर हो जाने पर उतार लेवे और पत्थर पर महीन पीसे तदनन्तर लोहे के मजबूत घड़े में रखकर ऊपर तक खूब शहद भर देवे और बरसात में घर के अन्दर राख की ढेरी में चार मास तक रखे। और वर्षा के व्यतीत हो जाने पर निकालकर शरीर को पञ्च कर्मों से शुद्ध करके हजार आहुतियों से हवन करके प्रातःकाल बलानुसार प्रत्येक दिन सेवन करे। दवा के पच जाने पर मूँग और आँवले के रस के साथ (नमक रहित तथा अल्प घी वाले) खूब घी पड़े हुए चावलों का व्यवहार करे और रेत की शय्या में शयन करे। (रेत को खूब साफ कर लेना चाहिये) उसके शरीर से एक मास बाद सम्पूर्ण अंगों से कृमि निकलने प्रारम्भ होते हैं। उनको चरक-संहिता के अन्दर बतलाये गये अणु तैल के द्वारा शरीर की मालिश करके बाँस की खपच्च (चिमटी) से निकाले। दूसरे महीने चींटियों के समान कीड़े निकलते हैं और तीसरे महीने जूँ के समान कृमि निकलते हैं, उनको भी अणु तैल लगाकर बाँस की खपच्च से निकाले। चौथे महीने दन्त, नाखून और बाल गिर जाते हैं पाँचवें महीने उसकी सब चीजें उत्तम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुण और लक्षणोंवाली हो जाती हैं और अलौकिक, सूर्य के समान प्रकाशमान शरीर को प्राप्त करता है। दूर से प्रत्येक बात को सुन सकता है और दीर्घ दृष्टि हो जाता है। रजोगुण और तमोगुण से रहित होकर सतोगुण (शक्ति विशेष) से युक्त होता है। वेदों को पढ़नेवाला और अपूर्व चीजों को उत्पन्न करनेवाला होता है, हाथी के समान बलशाली और घोड़े के समान वेगवान हो जाता है और पुनः युवावस्था को प्राप्त होता है तथा २०० वर्ष की आयु को भोगने में समर्थ होता है। इस प्रकार विधि, कर लेने पर अणु तैल की मालिश करनी चाहिये। अजकर्ण (असन) का काढ़ा शरीर की स्वच्छता और घाव आदि को दूर करने के लिये तथा खस के सहित कुएँ का जल स्नान करने के लिये, चन्दन लेप के लिये होना चाहिये, भोजन आदि का विधान १४वें प्रयोग के समान जानना चाहिये। छिलके निकाले हुए काश्मरी (गम्भारी) को भी इसी प्रकार प्रयोग करना चाहिये। लेकिन इसके प्रयोग में रेत में न सोवे और भोजन न खावे। केवल दूध के साथ चावलों को खावे। गुण विडङ्ग के विधान के समान ही हैं, रक्त पित्त के विकारों में भी इन प्रयोगों का उपयोग होता है। इस विधान को श्रेष्ठ वैद्य की देख-रेख में ही करना चाहिये।

पञ्चत्रिंशत प्रयोग—

यथोक्तमागारं प्रविश्य बलामूलार्द्धपलं पलं वा पयसालोड्य पिबेत् जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। एवं द्वादश रात्रमुपयुज्य द्वादश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वर्षाणि वपस्तिष्ठति । एवं दिवसशतमुपयुज्य वर्षशतं वपस्तिष्ठति । एवमेवातिबला नागबला विदारी शतावरीणामुपयोगः । विशेष-तस्त्वतिबलामुदकेन नागबला चूर्णं मधुना विदारी चूर्णं वा क्षीरेण शतावरीमप्येयं पूर्वेणान्यत् समानमाशिषश्च समाः । एतास्त्वौषधयो बलकामानां शोणितं छर्दयतां विविच्यमानानां चोपदिश्यन्ते ।

पूर्व कथित कुटी में प्रवेश करके खरेंटी की जड़ ४ तोले अथवा ८ तोले लेकर दूध में खूब मथकर पिये। दवा के पच जाने पर दूध, घी को चावलों के साथ मिलाकर खावे। इस प्रकार १२ दिन तक प्रयोग करने से १२ वर्ष तक आयु स्थिर रहती है। १०० दिन तक सेवन करने से १०० वर्ष तक आयु स्थिर रहती है। इसी प्रकार से अतिबला (ककड़ी) नागबला (गंगेरन्) विदारी, तथा शतावर का भी उपयोग करना चाहिये। विशेषकर अतिबला को पानी के साथ, नागबला के चूर्ण को शहद के साथ विदारी चूर्ण को दूध के साथ तथा शतावर को भी दूध के साथ सेवन करे और विधियाँ तथा गुण ३४वें प्रयोग के समान जानने चाहिए। ये औषधियाँ बल चाहने वाले, खून की कै करने वाले तथा शुद्धि चाहनेवालों के लिये कही गई हैं।

षट्त्रिंशत् प्रयोग—

वाराहीमूलतुला चूर्णं कृत्वा ततो मात्रांमधु युक्तां पयसाऽलोड्य पिबेत् जीर्णेपयः सर्पिरोदन इत्याहारः । प्रतिषेधोत्रपूर्ववत् क्रिया प्रयोग मुपसेवमानो वर्षशतमायुरवाप्नोति, स्त्रीषुचाक्षयताम् । एतेनैवचूर्णान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पयाऽवचूर्णं शृतशीतमभिमथ्याज्य मुत्पाद्य मधुयुतमुपयुञ्जीत सायम्प्रातरेक कालं वा । जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः । एवं मास मुपयुज्य वर्षशतायुर्भवति ।

दस सेर बाराही मूल को लेकर उनका महीन चूर्ण बनावे, उस चूर्ण से १ तोले से दो तोले तक की (बलाबल का विचार कर) मात्रा को लेकर शहद मिलाकर दूध के साथ विलोडन करके पीवे और जीर्ण होने पर दूध, घी तथा चावल का भोजन करे। ३४वें प्रयोग में लिखे अनुसार संयम से रहे, इस क्रिया को करता हुआ पुरुष १०० वर्ष की आयु को प्राप्त करता है और स्त्रियों से थकता नहीं है। इसी चूर्ण को दूध में भली प्रकार मिलाकर पकावे और ठण्डा होने पर मथ करके घी निकालकर तथा शहद मिलाकर (घी को) प्रातःकाल, सायंकाल, अथवा एक ही समय खावे। दवा के पचने पर ध, घी तथा चावल को खावे। इस प्रकार एक मास तक सेवन करके १०० वर्ष की आयु होती है।

सप्तत्रिंशत् प्रयोग—

चक्षुःकामः प्राणकामो वा वीजकसाराग्निमन्थमूलं निःक्वाथ्य माषप्रस्थं साधयेत् । तस्मिन् सिध्यति चित्रकमूलानामक्षमात्रं कल्कं दद्यादामलकरसचतुर्थभागं ततः स्विन्नमवतार्य्य सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा शीतीभूतं मधुसर्पिर्भ्यां संसृज्योपयुञ्जीत यथाबलं लवण परिहरन् भक्षयेत् । जीर्णे मुद्गामलकयूषेणालवणेन घृतवन्तमोदनमश्नीयात् पयसा वा मासत्रयमेवमाभ्यां प्रयोगाभ्यां चक्षुःसौपर्ण्यंवह्नवत्यनल्पबलो बलवांस्त्रीषु चाव्ययो वर्षशतायुर्भवतीति ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दृष्टि को चाहनेवाले तथा प्राण शक्ति की कामना करनेवाले पुरुष को चाहिए कि बिजौरा नींबू की जड़ तथा अर्णी की जड़ को लेकर दोनों का काढ़ा बनावे (तैयार काढ़ा आठ सेर होना चाहिए) इस काढ़े से दो सेर उड़द को पकावे। पकते समय चित्रक (चीता) की जड़ का कल्क दो तोले लेकर इसमें डाल देवे तथा आमलों का रस दो सेर डाले। उपरान्त इसके उड़दों के पक जाने पर हजार आहुतियाँ देकर (यज्ञ करके) ठंढा होने पर घी और शहद मिलाकर नमक को छोड़ता हुआ अपने बल के अनुसार खावे। औषधि के पकने पर नमक रहित मूँग और आँवले के रस के साथ अथवा दूध के साथ खूब घी से युक्त चावलों को खावे। इस प्रकार तीन मास तक प्रयोग करने से आँखें गरुड़ की तरह से, अत्यन्त बलवाला तथा स्त्रियों में शक्तिशाली क्षय से रहित सौ वर्ष वाला होता है।

अष्टत्रिंशत् प्रयोग—

मेधायुः कामः श्वेतावल्गुजफलान्यातपपरिशुष्काण्यादाय सूक्ष्म चूर्णानि कृत्वा गुडेन सह समालोड्य स्नेहकुम्भे सप्तरात्रं धान्यराशौ निदध्यात्। सप्तरात्रादुद्धृत्य हृतदोषस्य यथाबलं पिण्डं प्रयच्छेदनुदिते सूर्ये उष्णोदकं चानुपिबेत्। भल्लातकविधानवच्चागारप्रवेशो जीर्णौषध-श्चापराह्णे हिमाभिरद्भिः परिषिक्तगात्रः शालीनां षष्टिकानां च पयसा शर्करामधुरेणौदनमश्नीयादेवं षण्मासानुपयुज्य विगतपाप्मा बलव-र्णोपेतः श्रुतिनिगादी स्मृतिमानरोगो वर्ष शतायुर्भवति। कुष्ठिनं पाण्डु-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रोगिणस्सुदरिणं वा कृष्णाया गोमूत्रेणालोड्यार्द्धपलिकं यिगत लौहित्ये सवितरि पाययेत्। पराह्ने चालवणेनामलकयूषेण सर्पिष्मन्तमादन-मश्नीयात्। एवं मासमुपयुज्य स्मृतिमानरोगो वर्षशतायुर्भवति। एष एवोपयोगश्चित्रमूलानां रजन्याश्चित्रकमूले विशेषो द्विपलिकं पिण्डं परं प्रमाणं शेषं पूर्ववत्।

मेधा शक्ति और दीर्घायु पुरुष को चाहिए कि वह सफ़ेद बावची के फलों को लेकर धूप में सुखा ले और उनको महीन चूर्ण करके गुड़ के साथ अच्छी प्रकार मिलावे और घी से भावित (चिकने) घड़े में रखकर सात दिन धान के ढेर में गाड़ देवे। सात दिन के बाद उसमें से निकालकर अपने को विरेचन आदि पंचकर्मों के द्वारा शुद्ध करके सूर्य के निकलने से पूर्व अपनी शक्ति के अनुसार उसमें से खावे। पूर्व वर्णित कुटी में प्रवेश करके इसका सेवन करे और १४वें प्रयोग में वर्णित आचार विचार करें। दवा के पचने पर दोपहर के उपरान्त ठण्ढे पानी से स्नान कर साठी के चावलों में दूध, घी तथा शहद मिलाकर खावे। इस प्रकार ६ मास तक उपयोग करने पर पापों से रहित बल और वर्ण से युक्त होकर, वेदों का ज्ञाता, स्मरण शक्ति से युक्त, रोग रहित तथा १०० वर्ष की आयुवाला होता है। कुष्ठ रोगी को, पाण्डु रोग वाले को, उदर विकार से युक्त पुरुष को काली गाय के गौ मूत्र में मिलाकर उपरोक्त चूर्ण को सूर्य के अस्त होने पर पिलावे, और द्वितीय दिवस दोपहर को नमक रहित आँवले के रस के साथ घृत सहित चावलों का भोजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करावे। इस प्रकार एक मास तक प्रयोग करने पर स्मरण शक्ति से युक्त, रोग रहित तथा १०० वर्ष की आयु वाला होता है। इसी प्रकार चीते की जड़ को हल्दी के साथ खूब महीन पीसकर धान्य राशि में गाड़ देवे और प्रयोग करे, लेकिन इस प्रयोग में यह विशेषता है कि इसकी मात्रा १६ तोले है। शेष विधि पूर्वोक्त ही समझना चाहिए।

एकोनचत्वारिंशत् प्रयोग—

हृतदोषएव प्रति संसृष्ट भक्तो यथा क्रममागारं प्रविश्य मण्डूक पर्णीस्वरसमादाय सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा यथाबलं पयसालोड्य पिबेत् पयोऽनुपानं वा। तस्यां जीर्णायां यवान्नं पयसोपयुञ्जीत तिलैर्वा सहभक्षयित्वा त्रीन् मासान् पयोऽनुपानं जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। एवमुपयुञ्जाना ब्रह्मवर्चसी श्रुतनिगादी भवति वर्षशतमायुरवाप्नोति। त्रिरात्रोपोषितश्चत्रिरात्रमेनांभक्षयेत्। त्रिरात्रादूर्ध्वंपयः सर्पिरितिचोप युञ्जीत। विल्वमात्रंपिण्डं वा पयसालोड्य पिबेत् एवंदशरात्रमुपयुज्य मेधावी वर्ष शतायुर्भवति।

अपने शरीर को शुद्ध करके पूर्व अन्न के भली प्रकार परिपाक हो जाने पर विधि अनुसार कुटी में प्रवेश करके मण्डूकपर्णी का रस लेकर हजार विधिवत् आहुतियों को देकर दूध के साथ भलीभाँति मिलाकर पिये या रस को पीकर उसके उपरान्त दूध को पिये। रस के पक जाने पर जौ के अनाज को दूध के साथ खावे, अथवा तिलों के साथ उस रस का तीन मास तक उपयोग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करे और अनुपान दूध रक्खे। दवा के पचने पर दूध घी तथा चावलों को खावे। इस प्रकार सेवन करने से ब्रह्म तेज को प्राप्त होता है, वेदों को पढ़नेवाला, तथा १०० वर्ष की आयुवाला होता है। इस प्रयोग को तीन दिन उपवास करके तीन दिन खाना चाहिये। तीन दिन के बाद दूध और घी का सेवन करना चाहिये। ८ तोले इसको लेकर (तिल मिश्रित मण्डूकपर्णी के पिण्ड को) दूध के साथ मिलाकर प्रयोग करे। इस प्रकार दस दिन प्रयोग करने पर मेधावान् तथा १०० वर्ष की आयुवाला होता है।

चत्वारिंशत् प्रयोग—

हृतदोषएयागारं प्रविश्य प्रतिसंसृष्टभक्तो ब्राह्मीस्वरसमादाय सहस्रसम्पाताभिहुतं कृत्वा यथाबलमुपयुञ्जीत। जीर्णौषधश्चापराह्णे यवागूमलवणांपिवेत् क्षीरसात्म्यो वा पयसा भुञ्जीत। एवं सप्तरात्र मुपयुज्य ब्रह्मवर्चसी मेधावीभवति। द्वितीयं सप्तरात्रमुपयुज्य ग्रन्थ मीप्सितमुत्पादयति। नष्टञ्चास्य प्रादुर्भवति तृतीयं सप्तरात्रमुपयुज्य द्विरुच्चारितं शतमप्यवधारयति। एवमेकविंशतिरात्रमुपयुज्यालक्ष्मी रपक्रामति। मूर्तिमती चैनं वाग्देव्यनुप्रविशति। सर्वाश्चैनं श्रुतय उपतिष्ठन्ति। श्रुतधरः पञ्च वर्ष शतायुर्भवति।

पंच कर्मों के द्वारा शरीर को दोषों से रहित करके और कुटी में प्रवेश करके पूर्व के भोजन के भली प्रकार पच जाने पर ब्राह्मी के रस को लेकर हज़ार आहुतियों से हवन करके अपने बलानुसार सेवन करे। इसका सेवन प्रातः काल ही होना चाहिए और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

औषधि के पच जाने पर दोपहर के बाद नमक से रहित यवागू (जौ का गाढ़ा जूस) पिये। दूध को पीनेवाला व्यक्ति दूध के साथ खावे। इस प्रकार सात दिन तक उपयोग करने से ब्रह्म तेजवाला और मेधावी होता है। दूसरे सप्ताह में सेवन कर इच्छित ग्रन्थ को उत्पन्न करता है। और भूली हुई बातें भी याद करने में समर्थ होता है। तीसरे सप्ताह प्रयोग करके दो बार कहे हुए भी सौ श्लोकों को भी याद कर लेता है। इस प्रकार इक्कीस दिन सेवन करके दरिद्रता से रहित हो जाता है। साक्षात् सरस्वती इसके शरीर में प्रवेश करती है। और सब वेद इसको उपस्थित हो जाते हैं। इस प्रकार सुने हुए को धारण करने में समर्थ होकर पांच सौ वर्ष आयु का होता है।

एकचत्वारिंशत् प्रयोग—

ब्राह्मीस्वरसप्रस्थद्वये घृतप्रस्थं विडङ्गतण्डुलानां कुडवं द्वे द्वे पलेवचात्रिवृतयोर्द्वादश हरीतक्यामलकविभीतकानिश्लक्ष्णपिष्टान्यावाप्यैकध्यं साधयित्वा स्वनुगुप्तं निदध्यात। ततः पूर्वविधानेन मात्रां यथा बलमुपयुञ्जीत जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। एतेन ऊर्द्ध्वमधःस्तिर्य्यक् कृमयो निःक्रामन्ति। अलक्ष्मीरपक्रामति। पुष्करवर्णः स्थिरवयाः श्रुतनिगादी त्रिवर्षशतायुर्भवत्येतदेव कुष्ठ विषमज्वरापस्मारोन्मादविषभूतग्रहेष्वन्येषु च महाव्याधिषु च संशोधनमादिशन्ति।

दो सेर ब्राह्मी के स्वरस में दो सेर गाय का घी, विड़ङ्ग तंडुल (छिलके निकाले, तथा महीन वायविडङ्ग को) ६४ तोले. वच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तथा निशोथ प्रत्येक १६, सोलह तोले तथा हरड़, बहेड़ा, तथा आमला इनके प्रत्येक के ६६, ६६ तोले लेकर अत्यन्त महीन पीसकर सबको मिलाकर घड़े में रक्खे और मुँह बन्द करके एकान्त स्थान में रख देवे, तथा कुटी में प्रवेश करके और संशोधन से अपने शरीर को शुद्धकर बलानुसार इसका सेवन करे। दवा के पच जाने पर दूध, घी और चावल का भोजन करे। इससे ऊपर, नीचे तथा पक्षों से (किनारों से) शरीर के अन्दर से कीड़े निकलते हैं। निर्धनता तथा कुरूपता दूर होती है, कमल के समान वर्ण होकर दृढ़ आयु वाला, सुने हुए को याद रखनेवाला तीन सौ वर्ष की आयुवाला होता है। यही प्रयोग कुष्ठ (कोढ़), विषम-ज्वर, अपस्मार, (मृगी) उन्माद, विष, भूतग्रह तथा अन्य बड़े-बड़े रोगों में संशोधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

द्विचत्वारिंशत् प्रयोग—

हृतदोष एवागारं प्रविश्य हैमवत्या वचायाः पिण्डमामलकमात्रमभिहुतं पयसालोड्य पिबेत् जीर्णे पयः सर्पिरोदन इत्याहारः। एवं द्वादशरात्रमुपयुञ्जीत ततोऽस्य श्रोत्रं विव्रयते द्विरभ्यासात् स्मृतिमान् भवति त्रिरभ्यासाच्छ्रु तमादत्ते चतुर्द्वादशरात्रमुपपुज्य सर्वं तरति किल्विषं तार्क्ष्यदर्शनमुत्पद्यते शतायुश्च भवति। द्वे द्वे पले इतरस्या वचाया निःक्वाथ्य पिबेत पयसा समानं भोजनं समाः पूर्वेणाशिषश्च।

संशोधनों से शुद्ध होकर, और कुटी में प्रवेश करके, हिमालय में उत्पन्न वच (श्वेत वच) को पीसकर और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आँवले के बराबर दूध में खूब मिलाकर पिये और दवा के पच जाने पर दूध, घी और चावल का भोजन करे। इस प्रकार १२ दिन तक प्रयोग करने से श्रोत्र (कान) की शक्ति बढ़ जाती है। २४ दिन के सेवन से स्मरण शक्तिवाला होता है। ३६ दिन के सेवन से सुने हुए को धारण करने में समर्थ होता है। ४८ दिन तक सेवन करने से सब पापों से दूर होकर और गरुड़ के समान दृष्टि प्राप्त कर १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है। इसी प्रकार घुड़वच या दुधवच के सोलह-सोलह तोले लेके (दोनों में से किसी एक के) काढ़ा करके दूध के साथ पिये और उपरोक्त विधि के समान भोजन आदि करे। इससे उपरोक्त ही लाभ होते हैं।

त्रिचत्वारिंशत् प्रयोग—

वृद्ध दारकमूलानि श्लक्ष्ण चूर्णानि कारयेत्। शतावर्य्यारसेनैव सप्तवारांश्च भावयेत् अक्षमानन्तु तच्चूर्णं सर्पिषा सह योजयेत्। मासमात्रोपयोगेन मतिमान् जायते नरः। मेधावी स्मृतिमांश्चैव वली-पलित वर्जितः॥

वृद्धदारक (विधारा, बीज ताड़क) की जड़ को लेकर अत्यन्त महीन पीस लेवे और शतावर के स्वरस की सात भावना देवे। इस प्रकार तैयार हो जाने पर इसमें से दो तोले लेकर घी के साथ (घी उतना ले, जिससे कि चूर्ण मिल जाय) एक मास तक सेवन करे और कुटी प्रावेशिक विधि के अनुसार संयम से रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इसके प्रयोग से मनुष्य वृद्धावस्था से रहित होकर मेधावी तथा बुद्धिमान होता है।

चतुश्चत्वारिंशत प्रयोग—

श्लक्ष्णीकृतं भृङ्गराजस्य चूर्णं तिलार्द्धकं चामलकार्द्धकञ्च।
सशर्करं भक्षयतो गुड़ैर्वा न तस्य रोगा न जरा न मृत्युः॥
अन्धः पश्येद् गमनरहितो मत्तमात्तङ्गगामी।
मूको वाग्मी श्रवणरहितो दूरशब्दानुसारी॥
नीरुङ्मर्त्यो भवति पलितो नीलजीमूतकेशो।
जीर्णा दन्ताः पुनरपि नवाः क्षीर गौरा भवन्ति॥

महीन पीसे हुए भँगरे के चूर्ण में उससे आधे काले तिलों का चूर्ण तथा भँगरे के चूर्ण ही से आधे आमले के चूर्ण शक्कर या गुड़ के साथ खावे। उपयोग करते समय कुटी-प्रावेशिक विधि का प्रयोग करे। इसके सेवन से रोग, वृद्धावस्था तथा मृत्यु दूर होती है। इसके प्रयोग से अन्धा भी देखने में समर्थ हो सकता है। चलने में असमर्थ मस्त हाथी के समान गति वाला होता है। गूँगा विद्वान पुरुष की तरह बोलने में समर्थ हो सकता है। बहरा बहुत दूर तक सुनने में समर्थ हो सकता है। मनुष्य रोग रहित होता है और सफ़ेद बालों वाला काले बादलों की तरह बालों वाला हो जाता है और नष्ट हुए दाँत भी दूध के समान स्वच्छ और नवीन हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सोम-कल्प

पंचचत्वारिंशत् प्रयोग—

अतोऽन्यतमं सोममुपयुयुक्षुः सर्वोपकरणपरिचारकोपेतः प्रशस्तदेशे त्रिवृतमागारं कारयित्वा हृतदोषः प्रतिसंसृष्टभक्तः प्रशस्तेषु तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रेषु अंशुमन्तमादायाध्वरकल्पेनाहृतमभिषुतमभिहुतं चान्तरागारे कृतमङ्गलः सोमकन्दं सुवर्णसूच्या विदार्य्य पयो गृह्णीयात् सौवर्णे पात्रेऽञ्जलिमात्रं। ततः सकृदेवोपयुञ्जीत नास्वादयंस्तत उपस्पृश्य शेषमप्स्ववसाद्य यमनियमाभ्यामात्मानं संयोज्य वाग्यतोऽभ्यन्तरतः सुहृद्भिरुपास्यमानो विहरेत्। रसायनं पीतवांस्तु निवाते तन्मनाः शुचि।

आसीत् तिष्ठेत् क्रामेच्च न कथञ्चन संविशेत्।

सायं वा भुक्तवान् श्रुतशान्तः कुशशय्यायां कृष्णाजिनोत्तरायां सुहृद्भिरुपस्यामानः शयीत तृषितो वा शीतोदकमात्रां पिबेत्। ततः प्रातरुत्थायोपश्रुतशान्तिः कृतमङ्गलो गां स्पृष्ट्वातथैवासीत। तस्यजीर्णे सोमे छर्दिरुपपद्यते। ततः शोणितात्तं कृमिण्यामिश्रं छर्दितवतः सायं शृतशीतं क्षीरं वितरेत। ततस्तृतीयेऽहनि कृमिण्यामिश्रमतिसार्य्यंते स तेनानिष्टप्रतिग्रहभुक्त प्रभृतिभिर्विशेषैर्मुक्तः शुद्धतनुर्भवति ततः सायं स्नातस्य पूर्ववदेव क्षीरं वितरेत्। क्षौमवस्त्रास्तृतायां चैन-शय्यायां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शाययेत । ततश्चतुर्थेऽहनि तस्य श्वयथुरुत्पद्यते । ततः सर्वाङ्गेभ्यः कृमयो निष्क्रामन्ति । तदहश्च शय्यायां पांशुभिरवकीर्यमाणः शयीत ।

ततः सायं पूर्ववदेव क्षीरं वितरेत । एवं पञ्चमषष्ठयोर्दिवसयो-र्वर्त्तेत । केवलमुभयकालमस्मै क्षीरं वितरेत् । ततः सप्तमेऽहनि निर्मांसस्त्वगस्थिभूतः केवलं सोमपरिग्रहाद्देवोच्छ्वसिति । तदहश्च क्षीरेण सुखोष्णेन परिषिच्य तिलमधुक-चन्दनानुलिप्तदेहं पयः पाययेत् । ततोऽष्टमेऽहनि प्रातरेव क्षीरपरिषिक्तं चन्दनप्रदिग्धगात्रं पयः पाययित्वा पांशुशय्यां समुत्सृज्य क्षौमास्तृतायां शाययेत् ततो मांसमाप्यायते त्वक् चावदलति । दन्तनखरोमाणि चास्य पतन्ति । तस्य नवमदिवसात् प्रभृत्यणुतैलाभ्यङ्गः सोमवल्ककषायपरिषेकः । ततो दशमेऽहन्येतदेव वितरेत । ततोऽस्य त्वक् स्थिरतामुपैति एवमेकादशद्वादशयोर्वर्त्तेत । तत्र त्रयोदशात् प्रभृति सोमवल्ककषायपरिषेकः । एवमाषोडशाद् वर्त्तेत । ततः सप्तदशाष्टादशयोर्दिवसयोर्दशना जायन्ते शिखरिण स्निग्धवज्रवैदूर्यस्फटिकनिकाशाः समाः स्थिराः सहिष्णव । तदा प्रभृति चानवैः शालितण्डुलैः क्षीरयवागूमुपसेवेत यावत् पञ्चविंशतिरिति । ततोऽस्मै दद्यात् शाल्योदनं मृदूभयकालं पयसा ततोऽस्य नखा जायन्ते विद्रुमेन्द्रगोपकतरुणादित्यप्रकाशाः स्थिराः स्निग्धा लक्षण सम्पन्नाः केशाश्च जायन्ते त्वक् च नीलोत्पलातसीपुष्प वैदूर्य प्रकाशा । तदूर्ध्वञ्च मासात् केशान् वापयेद्वापयित्वा चोशीरचन्दन कृष्णतिल कल्कैः शिरः प्रदिह्यात पयसा वा स्नापयेत ।

ततोऽस्यानन्तरं सप्त रात्रात् केशा जायन्ते भ्रमराञ्जननिभाः कुञ्चिताः स्निग्धास्ततश्चिरात्रात् प्रथमपरिसरान्निष्क्रम्य मुहूर्त्तं स्थित्वा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पुनरेवान्तः प्रविशेत । ततोऽस्य बलातैलमभ्यङ्गार्थेऽवचार्यम् । यव पिष्टमुद्वर्त्तनार्थे । सुखोष्णञ्च पयः परिषेकार्थे । अजकर्णकषायमुत्साद-नार्थे । सौशीरंकूपोदकं स्नानार्थे । चन्दनमनुलेपार्थे । आमलकरसवि-मिश्रास्चास्य यूषसूपविकल्पाः । क्षीरमधुकसिद्धञ्च कृष्णतिलमवचार-णार्थे । एवं दशरात्रं ततोऽन्यद् दशरात्रं द्वितीये परिसरेवर्त्तेत । ततस्तृतीये परिसरे स्थिरी कुर्वन्नात्मानमन्यद्दशरात्रमासीत । किञ्चिदातपपवनान् वा सेवेत पुनश्चान्तः प्रविशेत् । न चात्मानमादर्शेषु वा निरीक्षेत रूपशालि-त्वात् । ततोऽन्यद्दशरात्रं क्रोधादीन् परिहरेदेवं सर्वेषामुपयोगः

सोम पान द्वारा कायाकल्प करनेवाला व्यक्ति, प्रथम आयु-र्वेदिक रीति से उत्तम एकान्त स्थान में तीन आगार (कोठी) वाला मकान बनवावे । शुभ तिथि, मुहूर्त्त, वार और नक्षत्र में क्षौर कर्म स्नानादि से शुद्ध होकर और होम मंगल पाठ करके प्राणाचार्य की आज्ञा से कुटी में प्रवेश करे । पश्चात वेदोक्त रीति से लाये हुए अंशुमान नामक सोमकन्द को प्रातःकाल स्वर्ण की छुरी से चीरकर उसका रस स्वर्ण-पत्र में लेकर, प्रसन्न चित्त होकर पी जावे । सोमपान करने के बाद अपने मन और शरीर को यम नियम पूर्वक रखकर मकान (कुटी) के भीतर तीसरे कोठे में (जहाँ हवा और धूप का प्रवेश न हो वहाँ) रहे । दिन में किसी समय मित्रों से वार्त्तालाप भी किया करे, परन्तु अधिक न बोले । अपने समय को अधिकतर जप, पाठ, स्वस्तिवाचन आदि में व्यतीत करे । क्षुधा लगने पर सायंकाल गाय का दूध पीवे । रात्रि को शान्ति पाठ करके कुशा के ऊपर काले मृगचर्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को बिछाकर शयन करे। जब प्यास लगे तब उत्तम कुएँ का शीतल जल पिये। प्रातःकाल सूर्योदय से बहुत पहले उठकर मंगलाचरण करके गौ का स्पर्श करे। अगले दिन सोम के पच जाने पर वमन (उल्टी) होता है, उसमें रुधिर और कृमि (रोग उत्पन्न करनेवाले कीड़े) निकलते हैं। ऐसा होने पर दोपहर के बाद शाम को गाय का औटा हुआ दूध ठंढा करके पिये। तीसरे दिन कीड़ों से मिले हुए दस्त होते हैं। इस प्रकार वमन (उल्टी) और विरेचन (दस्त) होकर शरीर बिलकुल शुद्ध हो जाता है। तब सायंकाल स्नान करके पहले की तरह दूध पिये और मकान में भीतर (तीसरे कोठे में ही) इधर-उधर कुछ टहलता रहे। फिर रात्रि में शान्ति पाठ करके रेशमी वस्त्र से बिछी हुई शय्या पर सो जावे। चौथे दिन समस्त शरीर में शोथ (सूजन) पैदा होती है, तथा रोम-रोम से कृमि निकलते हैं। उस दिन शय्या पर नरम रेत (बालू) बिछाकर सोवे और सायंकाल रोज़ की भाँति दूध ही पिये। इसी प्रकार पाँचवे और छठे दिन करे और अब दोनों समय दूध ही पिये। सातवें दिन शरीर से खाल और मांस गलकर गिर जाते हैं शरीर अस्थिमात्र रह जाता है। केवल सोमपान की शक्ति से ही रोगी श्वास लेता रहता है। इस दिन वैद्य कुछ गरम (शीतोष्ण) दूध को शरीर पर छिड़के, तथा तिल मुलैठी और चन्दन को पीसकर शरीर पर लेप कर देवे। इस दिन भी गाय का दूध औटाकर ठंढा करके दोनों समय पिलावे। आठवें दिन प्राणाचार्य प्रातःकाल ही दूध से शरीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को धोकर, चन्दन का लेप कर देवे और बालू (रेत) की शय्या हटाकर, रेशमी कपड़े से बिछी हुई शय्या पर बहुत धीरे से उठाकर लिटा देवे। इसके बाद शरीर की खाल और मांस नया होकर पुष्ट होने लगता है; तथा नख, रोम और दाँत गिर जाते हैं। नवें दिन सोम के वक्कल के काढ़े से स्नान कराकर सब शरीर में अणु तैल (एक विशेष तेल) मल देवे। दसवें दिन से लेकर सोलहवें दिन तक नित्य इसी प्रकार परिषेचन (स्नान) कराके अणु तैल की मालिश करे। सत्रहवें और अठारहवें दिन नए दाँत निकलते हैं। वे दाँत नुकीले, चिकने, हीरा और स्फटिक मणि (बिलौर) के समान श्वेत, चमकदार, तथा पुष्ट होते हैं। अब पुराने उत्तम चावलों की खीर का ही भोजन करावे और इसी प्रकार नित्य पच्चीसवें दिन तक खीर का ही भोजन करावे। फिर छब्बीसवें दिन पुराने कोमल साठी चाँवलों का भात दूध के साथ देवे। तब नए नख लाल मूँगा, बीर बहूटी के समान लाल चमकदार निकलते हैं। त्वचा (खाल) नील कमल, अलसी के फूल और वैडूर्यमणि के समान सुन्दर स्याम उत्पन्न होती है बाल भी चिकने काले और आ जाते हैं। इस प्रकार जब एक महीना हो जावे तब उन सिर के बालों को मुड़वा देवे और दूध से स्नान कराकर खस, चन्दन, काले तिल इनको पीसकर सिर पर लेप कर देवे। इसके सात दिन पीछे भौंरे और काजल के समान काले, चिकने, घुँघराले, चमकीले बाल निकलते हैं और इसके तीन-तीन दिन बाद भीतर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

के तीसरे कोठे में से निकलकर दूसरे दर्जे (कोठे) में आवे, और घड़ी दो घड़ी रहकर फिर भीतर ही तीसरे कोठे में चला जावे। अब "बला तैल" (औषध सिद्ध तैल) की नित्य सब शरीर में मालिश कराकर, जौ की पिट्ठी से उबटन करवावे और दूध शरीर पर छिड़ककर, बाद में खस पड़े हुए उत्तम-कूप-जल से स्नान करे। चन्दन का अनुलेप नित्य लगावे, और आँवलों का रस मिली हुई मूँग की दाल का यूष (रसा) पीवे; तथा मुलहठी का रस और दूध मिले हुए काले तिलों को खावें। फिर इसके दस दिन बाद भीतर के तीसरे कोठे से निकलकर दूसरे कोठे पर रहे; और इसी प्रकार आहार और दूध का सेवन करता हुआ दिन में कुछ समय के लिए दूसरे कोठे से निकलकर बाहरवाले कोठे पर आ जाया करे, और दो तीन घड़ी ठहरकर फिर दूसरे नम्बर के कोठे में ही चला जाय। फिर इसके दस-पंद्रह दिन बाद अपनी आत्मा को स्थिर रखता हुआ दूसरे कोठे से निकलकर बाहरवाले कोठे में पन्द्रह दिन तक। जब कायाकल्प को तीन महीने पूरे हो जावें और नया शरीर स्थिर होकर धूप, हवा, आहार-विहार आदि के सब सहन करने योग्य हो जावे तब चौथे मास की पूर्णमासी को मंगलाचरण, हवन, शान्ति पाठ करके, प्राणाचार्य को दान-दक्षिणा से पूजित करके, रसायन स्थान से (कुटी से) बाहर निकल आवे और इच्छानुसार सब जगह घूमे। यह सोमकल्प चार मास में पूरा होता है।

यह सोम औषधी २४ प्रकार की होती है यथा (१) अंशुमान्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

(२) मुंजवान् (३) चन्द्रमा (४) रजतप्रभ (५) दूर्वासोम (६) कनीयान् (७) श्वेताक्ष (८) कनकप्रभ (९) प्रतापवान् (१०) तालवृन्त (११) करवीर (१२) अंशुवान् (१३) स्वयंप्रभ (१४) महासोम (१५) गायत्री (१६) ऋत (१७) त्रैष्टुभ (१८) पांक्त (१९) जागत (२०) शाक्कर (२१) अग्निष्टोम (२२) रैवत (२३) त्रिपदा गायत्री (२४) उडुपति। इनमें से किसी भी सोम को लेकर पूर्वोक्त विधि के अनुसार प्रयोग करने से कायाकल्प होता है।

SPS
610 N 63 K
15247

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पुस्तक मिलने का पता

सरस्वती पुस्तक-भण्डार

आर्यनगर, लखनऊ.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE